आईएसबीएन : 978-93-7029-246-8

आरोग्य पथ

मासिक ई-पत्रिका

महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर

आरोग्य धाम, बालापार रोड, सोनबरसा, गोरखपुर-273007 (उ.प्र.)

जुलाई 2025 | वर्ष 04 | अंक 07

आरोग्य पथ

मासिक ई-पत्रिका

सम्पादक

डॉ. विमल कुमार दूबे (प्रधान संपादक)

डॉ. साध्वी नन्दन पाण्डेय (संपादक)

संस्करण

संस्करण : 2025

पृष्ठ : 31

आकार : A4

प्रकाशन

महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर

आरोग्य धाम, बालापार रोड, सोनबरसा, गोरखपुर

उत्तर प्रदेश - 273007

फोन : 9999764424, 8765005177

ईमेल : mguniversitygkp@mgug.ac.in

प्रकाशक

महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर आरोग्य धाम, बालापार रोड, सोनबरसा, गोरखपुर, 273007

आरोग्य पथ

मासिक ई-पत्रिका

सम्पादकीय

वर्षा ऋतु में आहार-विहार का आयुर्वेदिक दृष्टिकोण

वर्षा ऋतु प्रकृति का अद्भुत उपहार है, जो न केवल धरती की प्यास बुझाती है, बल्कि हरितिमा से जीवन में उल्लास भर देती है। इस ऋतु में प्रकृति जितनी मोहक होती है, मानव शरीर उतना ही संवेदनशील हो जाता है। यह ऋतु जहाँ एक ओर सौंदर्य और शीतलता का संदेश देती है, वहीं दूसरी ओर यह स्वास्थ्य की दृष्टि से अनेक सावधानियों की अपेक्षा भी रखती है। आयुर्वेद, योग और आधुनिक स्वास्थ्य विज्ञान सभी वर्षा ऋतु को विशेष मानते हैं और इसके अनुरूप आहार-विहार में समुचित बदलाव की सलाह देते हैं। आचार्य वागभट्ट अष्टांग हृदयम ग्रन्थ में लिखते हैं कि 'चयप्रकोपप्रशमा वायोग्रीष्मादिषु त्रिषु वर्षादिषु तु पित्तस्य, श्लेष्मणः शिशिरादिषु।' अर्थात वर्षा ऋतु में वात अर्थात वायु का शरीर में प्रकोप और पित्त का संचय होता है। तो वहीं अधिक वर्षा के उत्पन्न होने के कारण उत्पन्न हुई शैत्यता के कारण कफ भी कभी कभी बढ़ जाता है। अतः वातावरण की स्थिति का प्रभाव ऐसा होता कि भू से वाष्प निकलने, बारिश होने एवं जल का अम्ल विपाक होने के कारण अग्नि बल के क्षीण हो जाने से वातादि दोष प्रकुपित हो जाते हैं। वातावरण में आर्द्रता की वृद्धि, तापमान में परिवर्तन और रोगाणुओं की सक्रियता ये सभी मिलकर शरीर की प्रतिरोधक क्षमता को प्रभावित करते हैं। इसलिए वर्षा ऋतु में त्रिदोष नाशक विधि का पालन करना चाहिए। इस ऋतु में आहार (खानपान) और विहार (जीवनचर्या) का विशेष ध्यान रखना अत्यंत आवश्यक हो जाता है। चरक संहिता के अनुसार वर्षा ऋतु में जठराग्नि (पाचन शक्ति) कमजोर हो जाती है। शरीर में वात दोष का प्रकोप होता है, पित्त धीरे-धीरे बढ़ता है और कफ का संचित रूप भी परेशानियाँ पैदा कर सकता है। इस ऋतु में पाचन संबंधी रोग, त्वचा विकार, सर्दी-जुकाम, बुखार, डेंगू, मलेरिया आदि रोग तेजी से फैलते हैं। वर्षा ऋतु के इस असंतुलन को संतुलित करने के लिए उचित आहार-विहार की व्यवस्था करनी होती है। यदि हम अपने भोजन और दिनचर्या में सावधानी रखें, तो यह ऋतु हमें रोग से नहीं, बल्कि ऊर्जा और संतुलन से भर सकती है।

वर्षा ऋतु में भोजन हल्का, गर्म और सुपाच्य होना चाहिए। अधिक तैलीय, मसालेदार, बासी या खुले में बिकने वाला भोजन पूरी तरह से वर्जित होना चाहिए। मूंग दाल, जौ, पुराना चावल, दलिया जैसे हल्के अनाज। अदरक, हींग, काली मिर्च, सौंठ जैसे पाचन सहायक मसाले। नींबू पानी, हर्बल चाय आदि। गुनगुना और ताजा बना भोजन। उबली हुई सब्जियाँ और हल्का घीयुक्त भोजन इत्यादि हितकारी आहार कहे गए हैं। वहीं हमें बासी या ठंडा भोजन। दही, आइसक्रीम, ठंडे पेय। अत्यधिक खट्टे, तले हुए और मिर्च-मसाले वाले व्यंजन। सड़क किनारे खुले में मिलने वाला फास्ट फूड। आदि से बचना चाहिए। इस मौसम जठराग्नि मंद होती है। अतः भोजन की मात्रा कम रखें, पेट अधिक न भरें। भोजन के तुरंत बाद आराम न करें और जल को उबालकर सेवन करें। वर्षा ऋतु में दिनचर्या में भी विशेष सावधानी आवश्यक है। इस मौसम में अत्यधिक नमी, गंदगी और कीट-पतंगों का प्रकोप बढ़ जाता है। अतः स्वच्छता और अनुशासित दिनचर्या से ही रोगों से बचा जा सकता है। आचार्य वागभट्ट कहते हैं कि 'ब्राह्मे मुहूर्त उत्तिष्ठेत्स्वस्थो रक्षार्थमायुषः।' अर्थात स्वस्थ आयु की रक्षा हेतु ब्रह्म मुहूर्त में उठना चाहिए और गुनगुने जल से स्नान करना। शरीर पर सरसों या तिल का तेल लगाकर अभ्यंग (मालिश) करना चाहिए। हल्का व्यायाम, प्राणायाम एवं योगासन हमारे शरीर को सुदृढ़ बनाता है। गीले कपड़े पहनने से बचना चाहिए और पैरों की स्वच्छता का विशेष ध्यान रखते हुए नंगे पांव गीली जमीन पर नहीं चलना चाहिए। दोपहर में सोने से बचें क्यों कि इससे पाचन और वात-कफ का असंतुलन होता है। घर एवं आसपास के क्षेत्र को स्वच्छ, सूखा और हवादार रखें। बारिश में भीगना, देर रात तक जागना और सुबह देर से उठना। अत्यधिक निद्रा या आलस्य की प्रवृत्ति। ये आदतें वर्षा ऋतु में अहितकारी कहे गए हैं। इस ऋतु में कुछ औषधि द्रव्यों का सेवन कर सकते हैं जैसे तुलसी, गिलोय, त्रिफला, च्यवनप्राश आदि का सेवन रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाता है। तो वहीं हल्दी वाला दूध एवं हर्बल काढ़ा संक्रमण से बचाता है। नीम का स्नान जल में प्रयोग करने से त्वचा विकारों से बचाव होता है। घर के वातावरण को स्वच्छ और सुगन्धित बनाने के लिए, गुग्गुल, कपूर या नीम का कुआं कर सकते हैं जो कीटजनित रोगों से रक्षा भी करती हैं। वर्षा ऋतु में आहार-विहार का संयम ही हमारे स्वास्थ्य का रक्षक बनता है। यह ऋतु हमें प्रकृति से जुड़ने का अवसर देती है, परंतु इसके साथ-साथ वह हमें सजग और सतर्क रहने का भी संदेश देती है। यदि हम परंपराओं, विज्ञान और आयुर्वेद के संतुलन को समझें, तो यह ऋतु न केवल रोगों से बचाव करेगी, बल्कि जीवन में नवीन ऊर्जा और उत्साह का संचार भी करेगी। स्वास्थ्य की रक्षा केवल दवाओं से नहीं, बल्कि सतर्क दिनचर्या और संतुलित आहार से होती है। महर्षि चरक ने भी आयुर्वेद के प्रयोजन में स्वस्थ व्यक्ति के स्वास्थ्य रक्षा करने पर बल दिया है। वर्षा ऋतु में संयम और जागरूकता ही हमारी सच्ची छतरी है। जो हमें रोगों की बारिश से बचाती है।

प्रकाशक

महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर आरोग्य धाम, बालापार रोड, सोनबरसा, गोरखपुर, 273007

महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर
MAHAYOGI GORAKHNATH UNIVERSITY GORAKHPUR
स्वस्ति पन्थामनुचरेम्

आरोग्य पथ

मासिक ई-पत्रिका

माह विशेष

महर्षि वेदव्यास और गुरु शिष्य परम्परा

भारतीय संस्कृति में गुरु का स्थान सर्वोच्च माना गया है। गुरु ही वह दीपक हैं जो अज्ञानरूपी अंधकार को ज्ञानरूपी प्रकाश से आलोकित करते हैं। गुरु पूर्णिमा का पर्व इसी पवित्र गुरु-शिष्य परंपरा को स्मरण कराने और गुरु के प्रति श्रद्धा अर्पित करने का दिवस है। यह पर्व आषाढ़ मास की पूर्णिमा को मनाया जाता है, और इसका सीधा संबंध महर्षि वेदव्यास से है, जिन्हें भारतीय संस्कृति में 'आदि गुरु' और 'वेद व्यास' के नाम से जाना जाता है।

महर्षि वेदव्यास का जन्म आषाढ़ पूर्णिमा के दिन हुआ था। 'व्यासं वशिष्ठनप्तारं शक्तेः पौत्रमकल्मषम। पराशरात्मजं वन्दे शुकतातं तपोनिधिम।।' वे महर्षि पराशर और सत्यवती के पुत्र थे। उनका वास्तविक नाम कृष्णद्वैपायन था, क्योंकि उनका वर्ण कृष्ण था और जन्म द्वीप पर हुआ था। उन्होंने वेदों का संहिताकरण कर उन्हें चार भागों ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद में विभाजित किया। इस महान कार्य के कारण ही उन्हें वेदव्यास कहा गया। इसके अतिरिक्त उन्होंने अठारह पुराण, महाभारत और ब्रह्मसूत्र की रचना कर भारतीय ज्ञान-संपदा को अमर बना दिया।

गुरु पूर्णिमा का महत्व केवल महर्षि वेदव्यास की स्मृति तक सीमित नहीं है, बल्कि यह गुरु के प्रति कृतज्ञता, विनम्रता और सेवा का भाव प्रकट करने का अवसर भी है। इस दिन शिष्य अपने गुरु का पूजन करते हैं, उन्हें वस्त्र, पुष्प, फल, मिष्ठान आदि अर्पित करते हैं और उनके आशीर्वाद से अपने जीवन को धन्य मानते हैं। प्राचीन समय में गुरुकुलों में यह दिन विशेष रूप से मनाया जाता था, जब सभी शिष्य गुरु के आश्रम में एकत्र होकर विशेष अनुष्ठान करते और शिक्षा के साथ-साथ जीवन-मूल्यों को आत्मसात करते थे।

आध्यात्मिक दृष्टि से भी गुरु पूर्णिमा का महत्व अत्यधिक है। योग और ध्यान की साधना में गुरु का मार्गदर्शन अनिवार्य है, क्योंकि गुरु ही साधक के मार्ग की कठिनाइयों को पहचानकर उन्हें सही दिशा दिखाते हैं। संत कबीर ने भी कहा है- 'गुरु गोविंद दोऊ खड़े, काके लागूं पाय। बलिहारी गुरु आपनो, गोविंद दियो बता।।' अर्थात, गुरु ही वह हैं जो ईश्वर की ओर ले जाने का मार्ग बताते हैं, इसलिए उनका स्थान ईश्वर से भी श्रेष्ठ है।

आज के युग में गुरु का अर्थ केवल विद्यालय के शिक्षक से नहीं है, बल्कि वह कोई भी व्यक्ति, ग्रंथ या अनुभव हो सकता है, जो हमें जीवन में सही दिशा और उद्देश्य प्रदान करें। इस दिन हम अपने जीवन में उन सभी प्रेरणा-स्रोतों के प्रति आभार व्यक्त करते हैं जिन्होंने हमें बेहतर इंसान बनने में मदद की है। अतः गुरु पूर्णिमा केवल एक धार्मिक पर्व नहीं, बल्कि यह आत्मनिरीक्षण, कृतज्ञता और नवप्रेरणा का पर्व है। महर्षि वेदव्यास के जीवन और कृतित्व से हमें यह शिक्षा मिलती है कि ज्ञान का प्रसार ही मानव जीवन का सर्वोच्च धर्म है। इस दिन हम संकल्प लें कि गुरु के दिखा मार्ग पर चलते हुए ज्ञान, सत्य और सदाचार का पालन करेंगे और गुरु परंपरा की इस अमूल्य विरासत को आगे बढ़ाएंगे।

प्रकाशक

महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर आरोग्य धाम, बालापार रोड, सोनबरसा, गोरखपुर, 273007

आरोग्य पथ

मासिक ई-पत्रिका

हमारी विरासत

परमाणु संरचना की अवधारणाः महर्षि कणाद

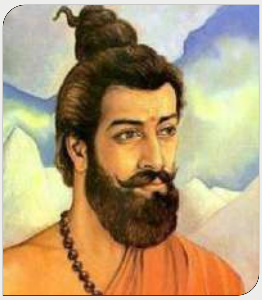

भारतीय ज्ञान परंपरा में पदार्थ के सूक्ष्मतम घटक की खोज और उसकी संरचना के विषय में महत्त्वपूर्ण योगदान महर्षि कणाद का है। वे वैदिक कालीन महान दार्शनिक और वैज्ञानिक थे, जिन्होंने पदार्थ की मूल इकाई के रूप में 'अणु' की संकल्पना प्रस्तुत की। उनका यह विचार आज से लगभग ढाई हज़ार वर्ष पूर्व प्रतिपादित हुआ, जो आधुनिक भौतिकी के परमाणु सिद्धांत से अद्‌भुत समानता रखता है।

महर्षि कणाद का जन्म विदर्भ (वर्तमान महाराष्ट्र) क्षेत्र में हुआ माना जाता है। उनका वास्तविक नाम 'कश्यप' या 'उलूक' भी बताया गया है, किंतु 'कणाद' नाम उन्हें इस कारण मिला क्योंकि वे पदार्थ के सूक्ष्मतम कण 'कण' पर शोध करते थे और उनका संग्रह करते थे। वे वैशेषिक दर्शन के प्रवर्तक हैं, जो भारतीय दर्शन के छह आस्तिक दर्शनों में से एक है। वैशेषिक दर्शन का मुख्य उद्देश्य पदार्थ के स्वरूप, गुण, क्रिया और कारण-कार्य संबंध का विश्लेषण करना है। महर्षि कणाद के अनुसार यह जगत अनादि और नित्य है, किन्तु उसके घटक (संयोग, परिणाम) परिवर्तनशील हैं। उन्होंने कहा कि ब्रह्मांड अणुओं (परमाणु) से निर्मित है और यही अणु पदार्थ की आधारभूत इकाई हैं। महर्षि कणाद के अनुसार -'परमाणु अविभाज्य, अविनाशी, अचिन्त्य और नित्य हैं।' अणु को उन्होंने दो मुख्य प्रकारों में विभाजित किया।

1. पार्थिव अणु - पृथ्वी से उत्पन्न 2. आप्य अणु - जल से उत्पन्न 3. तेजस अणु- अग्नि से उत्पन्न 4. वायव्य अणु- वायु से उत्पन्न (आकाश तत्त्व को वे अणु से रहित मानते थे, क्योंकि वह गुणात्मक माध्यम है। (महर्षि कणाद का मानना था कि दो अणु मिलकर (द्वयणुक) बनाते हैं और तीन द्वयणुक मिलकर 'त्रयणुक' बनाते हैं। इस प्रकार सूक्ष्मतम कण - 'दृश्यमान रूप धारण करते हैं। उन्होंने यह भी प्रतिपादित किया कि पदार्थ का गुण, रंग, स्वाद, गंध और स्पर्श उसके अणुओं की प्रकृति और उनके संयोजन पर निर्भर करता है। महर्षि कणाद के अनुसार अणु स्वाभाविक रूप से स्थिर रहते हैं, लेकिन 'अकृष्ट' (अकृष्य शक्ति या कारण) के प्रभाव से उनमें गति आती है। यह गति ही संयोग, वियोग और नए पदार्थों के निर्माण का कारण बनती है। ऋतु परिवर्तन, जैविक वृद्धि, और पदार्थ के रूपांतरण-सभी अणुओं की गति और संयोजन से होते हैं।

आधुनिक परमाणु सिद्धांत (John Dalton, 1803) में यह कहा गया कि पदार्थ सूक्ष्म, अविभाज्य परमाणुओं से बने हैं, जो निश्चित अनुपात में संयोजन करके यौगिक बनाते हैं। आश्चर्य की बात यह है कि महर्षि कणाद ने लगभग दो सहस्राब्दी पूर्व ही यह विचार प्रस्तुत कर दिया था। हालाँकि उन्होंने इसे दार्शनिक और तार्किक दृष्टि से प्रतिपादित किया, न कि प्रयोगात्मक पद्धति से।

महर्षि कणाद का अणुवाद केवल भौतिकी का ही सिद्धांत नहीं था, बल्कि इसका गहरा दार्शनिक आधार भी था। उनके अनुसार ब्रह्मांड अनादि है। पदार्थ और आत्मा अलग-अलग तत्व हैं। अणु नाशवान पदार्थ का कारण होते है, किंतु स्वयं नित्य और अविनाशी होते हैं। सृष्टि और प्रलय अणुओं के संयोजन और विघटन की प्रक्रिया है। महर्षि कणाद के अणुवाद ने यह सिद्ध कर दिया कि भारतीय ऋषि केवल आध्यात्मिक चिंतन में ही नहीं, बल्कि वैज्ञानिक दृष्टिकोण से भी अद्‌भुत प्रज्ञा रखते थे। उनका यह सिद्धांत आज भी वैज्ञानिक और दार्शनिक विमर्श में प्रेरणा का स्रोत है।

प्रकाशक

महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर आरोग्य धाम, बालापार रोड, सोनबरसा, गोरखपुर, 273007

भारत की माननीय राष्ट्रपति श्रीमती द्रोपदी मुर्मु जी का विश्वविद्यालय में आगमन

लोकार्पण एवं शिलान्यास समारोह

महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर

लोकार्पण एवं शिलान्यास समारोह के दौरान (बाएं से) माननीय कुलपति, माननीय राज्यपाल, माननीय राष्ट्रपति, माननीय मुख्यमंत्री व अन्य

दिनांकः 01 जुलाई, 2025 को महामहिम राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने सोमवार को महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय के अकादमिक भवन, प्रेक्षागृह व पंचकर्म सेंटर का लोकार्पण तथा महिला छात्रावास का शिलान्यास किया। राष्ट्रपति ने वन महोत्सव के अंतर्गत रुद्राक्ष का पौधा रोपा, फिर प्रदर्शनी का अवलोकन किया।

उन्होंने कहा कि नए महिला छात्रावास का शिलान्यास कर सबसे अधिक खुशी हो रही है। शिक्षा ही सशक्तिकरण का सबसे प्रभावी माध्यम है, इसलिए यह कदम नारी सशक्तिकरण की दिशा में अमूल्य पहल है।

महाराणा प्रताप के आदर्शों से प्रेरित सभी संस्थानों में प्रसारित होती है राष्ट्र सर्वोपरि की भावना राष्ट्रपति ने महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद की सराहना की। उन्होंने कहा कि महाराणा प्रताप के आदर्शों से प्रेरित सभी संस्थानों में राष्ट्र सर्वोपरि की भावना प्रसारित होती है। लगभग 700 वर्ष पहले महाराणा प्रताप ने राष्ट्रगौरव के लिए त्याग और पराक्रम का जो आदर्श प्रस्तुत किया था, वह देशवासियों को सदैव प्रेरित करता रहेगा।

महामहिम ने आशा जताई कि इस विश्वविद्यालय के सभी विद्यार्थी प्रोफेशनल एजुकेशन पर आधारित उत्कृष्टता प्राप्त करने के साथ–साथ आध्यात्मिकता तथा राष्ट्रप्रेम के आदर्शों को अपने आचरण में ढालेंगे। यह संस्थान महंत दिग्विजयनाथ एवं महंत अवेद्यनाथ जी महाराज की परंपरा से जुड़ा हुआ है। उनकी परंपरा के अनुरूप गोरक्षपीठ व महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद से जुड़े सभी संस्थानों, व्यक्तियों (विशेषकर युवाओं) को जनसेवा, शिक्षा तथा भारत के सांस्कृतिक मूल्यों के प्रति अगाध श्रद्धा के साथ कार्य करना चाहिए।

नए पंचकर्म केंद्र से अधिकाधिक लोग हो पाएंगे लाभान्वित : गोरखनाथ मंदिर से निकली गौरवशाली शाखाओं में से महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय भी शोभायमान है। विश्वविद्यालय के नए एकेडमिक भवन में बेहतर सुविधाएं उपलब्ध होने से विद्यार्थी, शिक्षक और अधिक निष्ठा के साथ आगे बढ़ेंगे।

राष्ट्रपति ने कहा कि मानव शरीर को दोषमुक्त बनाने में पंचकर्म की प्रक्रिया बहुत प्रभावी सिद्ध हुई है। इस क्रिया की सहायता से असाध्य रोगों के सफल उपचार के उदाहरण देखने को मिलते हैं। आशा है कि नए पंचकर्म केंद्र से अधिकाधिक लोग लाभान्वित हो पाएंगे।

विभिन्न क्षेत्रों में प्रगति के नए प्रतिमान स्थापित कर रहीं बेटियां राष्ट्रपति ने कहा कि कक्षा सात की पढ़ाई पूरी करके मैं सत्र 1970–71 में आठवीं व उसके आगे की पढ़ाई करने के लिए अपने गांव से 300 किमी. दूर भुवनेश्वर गई। 55 वर्ष पहले वह दूरी भी बहुत अधिक थी, क्योंकि तब आवागमन के साधन बहुत सीमित हुआ करते थे। मुझसे पहले मेरे गांव की कोई बालिका बाहर पढ़ने नहीं गई थी। भुवनेश्वर में मुझे महिला छात्रावास में रहने की सुविधा मिली। अब तो बहुत बदलाव आ चुका है। हमारी बेटियां विभिन्न क्षेत्रों में प्रगति के नए प्रतिमान स्थापित कर रही हैं, लेकिन आज भी अनेक बालिकाओं को उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है। बेटियों के लिए सुरक्षित

आवास न होने से उनकी उच्च शिक्षा की यात्रा में अवरुद्ध होता है। कभी–कभी शिक्षा रुक भी सकती है, इसीलिए विश्वविद्यालय में नए बालिका छात्रावास की स्थापना का निर्णय महिलाओं की उच्च शिक्षा में बहुत बड़ा योगदान है।

उन्होंने कहा कि शिक्षा ही सशक्तिकरण का सबसे प्रभावी माध्यम है, इसलिए यह कदम नारी सशक्तिकरण की दिशा में अमूल्य पहल है। राष्ट्रपति ने इस कदम की सराहना की।

गोरखपुर व आसपास के क्षेत्र में उच्च शिक्षा में योगदान देने वाला यह पहला निजी विवि राष्ट्रपति ने कहा कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के तहत परोपकार व जनहितैषी लक्ष्यों के लिए कार्य करने में निजी उच्च शिक्षण संस्थानों की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। गोरखपुर व आसपास के क्षेत्र में उच्च शिक्षा में योगदान देने वाला यह पहला निजी विश्वविद्यालय है। उच्च शिक्षा में अग्रणी योगदान के लिए मैं गोरक्षपीठ व महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद की सराहना करती हैं। केवल चार वर्ष में विश्वविद्यालय ने विकास यात्रा में हासिल कीं प्रभावशाली उपलब्धियां माननीय राष्ट्रपति महोदया ने कहा कि पूर्ववर्ती राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद ने इस विश्वविद्यालय का उद्घाटन किया था। केवल चार वर्ष में विश्वविद्यालय ने विकास यात्रा में प्रभावशाली उपलब्धियां हासिल की हैं। यह संस्थान पूर्वी उप्र में उच्च शिक्षा एवं रोजगारपरक शिक्षा का प्रमुख केंद्र बन गया है। इस विकास यात्रा में मुख्यमंत्री, विश्वविद्यालय के संस्थापक, कुलाधिपति योगी आदित्यनाथ का अमूल्य दिशा–निर्देश व संबल उपलब्ध रहा है। विश्वविद्यालय की उपलब्धियों के लिए राष्ट्रपति ने योगी जी व पूरी टीम को बधाई दी।

विवि ने अनेक राष्ट्रीय–अंतरराष्ट्रीय संस्थानों के साथ सहयोग की दिशा में बढ़ाए हैं कदम : राष्ट्रपति ने कहा कि इस विवि के अंतर्गत संचालित मेडिकल कॉलेज, आयुर्वेद कॉलेज व चिकित्सालयों के जरिए एलोपैथी–आयुर्वेद की शिक्षा व चिकित्सा व्यवस्था की गई है। इसने चिकित्सा पद्धति की समग्रता को रेखांकित किया है। 650 बेड की सुविधाओं से युक्त श्री गोरक्षनाथ मेडिकल कॉलेज हॉस्पिटल एवं रिसर्च सेंटर द्वारा निकट भविष्य में 1800 बेड का नया चिकित्सालय स्थापित किया जाएगा। यहां के आयुर्वेद चिकित्सालय में 200 बेड की सुविधा उपलब्ध है। इस विवि ने प्रोफेशनल एजुकेशन एवं चिकित्सा के अलावा कृषि अनुसंधान, ग्राम्य विकास, उद्यमिता प्रोत्साहन, वनस्पति अनुसंधान जैसे क्षेत्र में अनेक राष्ट्रीय–अंतरराष्ट्रीय संस्थानों के साथ सहयोग की दिशा में कदम बढ़ाए हैं। आशा है कि इन प्रयासों के ठोस परिणाम निकट भविष्य में ही दिखाई देने लगेंगे। जब पूर्वांचल अधिक स्वस्थ. सुरक्षित होगा तब पूरा यूपी और तेजी से समग्र प्रगति के मार्ग पर बढ़ेगा

राष्ट्रपति ने कहा कि जब पूर्वांचल और अधिक स्वस्थ–सुरक्षित होगा, तब पूरा यूपी और तेजी से समग्र प्रगति के मार्ग पर बढ़ेगा। जब देश की सबसे बड़ी आबादी वाला राज्य तेजी से विकास पथ पर आगे बढ़ेगा तो तब पूरा भारत प्रगति के नए प्रतिमान स्थापित करेगा। राष्ट्रपति ने अपील की कि दृढ़ संकल्प के साथ हम सभी विकसित भारत के निर्माण की दिशा में आगे बढ़ते रहें।

कार्यक्रम में राज्यपाल आनंदी बेन पटेल, मुख्यमंत्री व कुलाधिपति योगी आदित्यनाथ, काबीना मंत्री सूर्यप्रताप शाही, स्वतंत्र देव सिंह, डॉ. संजय निषाद, कुलपति डॉ. सुरिंदर सिंह, गैलेंट फाउंडेशन के अध्यक्ष चंद्रप्रकाश अग्रवाल आदि मौजूद रहें।

आरोग्य पथ

मासिक ई-पत्रिका

लोकार्पण एवं शिलान्यास समारोह

लोकार्पण एवं शिलान्यास समारोह के दौरान माननीय मुख्यमंत्री श्री योगी आदित्यनाथ जी महाराज

दिनांकः 01 जुलाई, 2025 को मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा है कि महाराणा प्रताप (एमपी) शिक्षा परिषद की संस्थाएं अपने संस्थापकों की भावनाओं और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की मंशा के अनुरूप राष्ट्र प्रथम के भाव से सेवा कार्य कर रहीं हैं। महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय भी परिषद की इसी भावना को उच्च शिक्षा और चिकित्सा के सेवा क्षेत्र में मूर्तमान कर रही है।

सीएम योगी मंगलवार शाम महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर (एमजीयूजी) में राष्ट्रपति द्रोपदी मुर्मु के मुख्य आतिथ्य में आयोजित अकादमिक भवन, पंचकर्म केंद्र व ऑडिटोरियम के लोकार्पण और गर्ल्स हॉस्टल के शिलान्यास समारोह में अपने विचार व्यक्त कर रहे थे। उन्होंने कहा कि 1932 में युगपुरुष ब्रह्मलीन महंत दिग्विजयनाथ जी ने शैक्षिक रूप से इस पिछड़े क्षेत्र में महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद की स्थापना की थी। आजादी के बाद पहला विश्वविद्यालय स्थापित करने में इसी शिक्षा परिषद का योगदान रहा। आज महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद की 52 से अधिक संस्थाएं शिक्षा, स्वास्थ्य और लोक कल्याण के क्षेत्र में राष्ट्र प्रथम की सेवा भावना को साकार कर रहीं हैं।

मुख्यमंत्री ने राष्ट्रपति के दो दिवसीय प्रदेश दौरे के दौरान आईवीआरआई बरेली, गोरखपुर एम्स और आयुष विश्वविद्यालय के कार्यक्रमों का उल्लेख करते हुए कहा कि ये सभी उच्च स्तरीय संस्थान विज्ञान के अलग–अलग फील्ड में काम करते हैं लेकिन राष्ट्रपति के इस दौरे का समापन महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय में हो रहा है जो इन सभी फील्ड में काम करने वाला संस्थान है। इस विश्वविद्यालय में मॉडर्न मेडिकल साइंस, आयुर्वेद, नर्सिंग, फार्मेसी, एग्रीकल्चर सभी फील्ड में काम किया जा रहा है।

एमजीयूजी के समारोह में मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने राष्ट्रपति द्रोपदी मुर्मु का स्वागत करते हुए श्रीमती मुर्मु के संघर्ष और सफलता की यात्रा का भी ध्यान दिलाया। कहा कि देश की कोटि–कोटि मातृशक्ति के लिए राष्ट्रपति प्रेरणा पुंज हैं। वह फर्श से अर्श तक और शून्य से शिखर की यात्रा की विशिष्ट पहचान हैं। उन्होंने संघर्षों से अपना रास्ता बनाया और निजी दिक्कतों को कभी भी राष्ट्र प्रथम के मार्ग में बाधक नहीं बनने दिया। मुख्यमंत्री ने कहा कि पहली बार भारत के संवैधानिक प्रमुख का सड़क पर छात्रों के बीच आत्मीय संवाद अभिभूत करने वाला है। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने राष्ट्रकवि रामधारी सिंह दिनकर की कविता, 'वसुधा का नेता कौन हुआ, भूखंड विजेता कौन हुआ, अतुलित यश क्रेता कौन हुआ, नव–धर्म प्रणेता कौन हुआ, जिसने न कभी आराम किया, विघ्नों में रहकर नाम किया' का उद्धरण देते हुए कहा कि राष्ट्रपति द्रोपदी मुर्मु इसकी साक्षात प्रतिमूर्ति हैं। उन्होंने कहा कि राष्ट्रपति का दौरा उत्तर प्रदेश, खासकर पूर्वी उत्तर प्रदेश के लिए अत्यंत प्रेरक रहा। मुख्यमंत्री ने राज्यपाल आनंदी बेन पटेल का स्वागत करते हुए कहा कि उन्होंने अपने संघर्षमय जीवन में एक शिक्षिका से राज्यपाल पद तक की सेवा यात्रा की है।

मुख्यमंत्री ने आज कार्यकम के दौरान बारिश होने को लेकर भी बात की। कहा कि 2021 में जब तत्कालीन राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद एमजीयूजी का लोकार्पण करने आए थे तब भी काफी बारिश हुई थी। और आज महामहिम राष्ट्रपति द्रोपदी मुर्मु के आगमन पर भी बारिश यज्ञ की सफलता का आधार बन रही है।

लोकार्पण एवं शिलान्यास समारोह | महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर

लोकार्पण एवं शिलान्यास समारोह के दौरान सम्बोधित करतीं माननीय राज्यपाल

दिनांकः 01 जुलाई, 2025 को राष्ट्रपति द्रोपदी मुर्मु के मुख्य आतिथ्य में मंगलवार शाम महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर (एमजीयूजी) में आयोजित अकादमिक भवन, ऑडिटोरियम, पंचकर्म केंद्र के लोकार्पण तथा न्यू गर्ल्स हॉस्टल के शिलान्यास समारोह में राज्यपाल आनंदीबेन पटेल ने एमजीयूजी की चार साल से भी कम समय की उत्कृष्ट प्रगति की मुक्त कंठ से सराहना की। उन्होंने कहा कि नाथपंथ के प्रवर्तक की तपोभूमि पर यह विश्वविद्यालय शिक्षा और स्वास्थ्य सेवा का संगम बनकर उभर रहा है।

राज्यपाल ने कहा कि राष्ट्रपति की उपस्थिति आज महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय के लिए एक विशेष अवसर है। आज यहां एक अकादमिक भवन, ऑडिटोरियम, पंचकर्म केंद्र का लोकार्पण और गर्ल्स हॉस्टल का शिलान्यास किया गया है। यह केवल एक निर्माण कार्य नहीं बल्कि सशक्तिकरण की दिशा में उठाया गया एक दृढ कदम है। यह आने वाली पीढ़ियों को सकारात्मक तरीके से प्रभावित करेगा। उन्होंने कहा कि गोरखपुर की यह पूण्य भूमि नाथपंथ के प्रवर्तक और भारत में सामाजिक परिवर्तन के वाहक महायोगी गोरखनाथ जी की तपोभूमि है। यह भूमि स्वयं में धार्मिक, आध्यात्मिक एवं सांस्कृतिक चेतना की स्रोत रही है। योग, स्वास्थ्य एवं शिक्षा के संगम के रूप में यह विश्वविद्यालय एक प्रेरणा स्रोत के रूप में उभर रहा है। उन्होंने कहा कि यह विश्वविद्यालय शिक्षा एवं स्वास्थ्य सेवा के माध्यम से सामाजिक कल्याण की बुनियादी संरचना को सशक्त करने का कार्य करेगा।

एमजीयूजी की सराहना करते हुए कहा कि यह विश्वविद्यालय केवल पारम्परिक चिकित्सा क्षेत्र में ही नहीं बल्कि आधुनिक विधाओं के क्षेत्र में भी कार्य कर रहा है। यह पूरे देश के लिए प्रेरणा की बात है।

राज्यपाल ने कहा कि हमारी सनातन परम्परा में सेवा को धर्म माना गया है। दयाभाव को ध्यान में रखकर गोरक्षपीठ ने शिक्षा, स्वास्थ्य एवं लोककल्याण के क्षेत्र में कई महत्वपूर्ण कार्य किये है। यह विश्वविद्यालय स्वास्थ्य, सेवा एवं शिक्षा की त्रिवेणी है। यहां मेडिकल के सभी पाठ्यक्रम संचालित हो रहे है। इसमें 100 एमबीबीएस की सीट, 650 बेड का अत्याधुनिक चिकित्सालय भी है। विश्वविद्यालय द्वारा 1800 बेड का एक चिकित्सालय आगे हम सबको प्राप्त होगा। यह विश्वविद्यालय सनातन परम्परा के आयुर्वेद में शिक्षा हेतु बीएएमएस पाठ्यक्रम एवं 200 बेड का आयुर्वेद चिकित्सालय भी है। इस विश्वविद्यालय में शोध एवं नवाचार को भी बढ़ावा दिया जा रहा है।

राज्यपाल ने कहा कि भारत की उच्च शिक्षा की बात करें तो हमारा इतिहास एक गौरवशाली परम्परा की गवाही देता है। प्राचीन भारत में तक्षशिला, नालंदा, विक्रमशिला जैसे विश्वविद्यालयों ने समस्त विश्व को शिक्षा, संस्कृति एवं ज्ञान का मार्ग दिखाया था। पूरी दुनिया के जिज्ञासु विधार्थी यहां अध्ययन के लिए आते थे। कुछ समय के लिए यह परम्परा धुमिल हुई थी, लेकिन हमारे वैज्ञानिकों, शिक्षकों एवं विचाराकों ने अपनी प्रतिभा एवं समर्पण के माध्यम से यह सिद्ध किया है कि भारत की ज्ञानधारा कभी रूकती नही है। वे न केवल राष्ट्र में बल्कि अंतरराष्ट्रीय पटल पर भी अपनी मेधा से भारत का नाम रोशन कर रहे है।

दृढ़ विश्वास है कि यह विश्वविद्यालय ज्ञानवान, आत्मनिर्भर, सशक्त और स्वस्थ नागरिको का निर्माण करेगा और भारत को वैश्विक पटल पर और अधिक सशक्त करने में समर्थ होगा।

राज्यपाल ने कहा कि सभी छात्र ज्ञान प्राप्ति की ओर निरंतर अग्रसर रहें क्योंकि ज्ञान ही वह शक्ति है जो व्यक्ति को केवल रोजगार ही नही बल्कि चरित्रए विवेक व नेतृत्व भी प्रदान करता है।

पौधरोपण करती माननीय राष्ट्रपति

लोकार्पण एवं शिलान्यास समारोह के दौरान आगंतुक गणमान्य

दिनांकः 01 जुलाई, 2025 को महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर (एमजीयूजी) में मंगलवार को आयोजित लोकार्पण–शिलान्यास के कार्यक्रम के दौरान विश्वविद्यालय के परिसर में रुद्राक्ष का पौधा रोपकर राष्ट्रपति द्रोपदी मुर्मु ने अपनी स्मृतियों को परिसर में बसा दिया।

पौधरोपण, मंचीय कार्यकम से पूर्व हुआ। मंच पर कार्यक्रम के दौरान मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने राष्ट्रपति को स्मृति चिन्ह देकर उनका अभिनंदन किया। इस अवसर पर राज्यपाल आनंदी बेन पटेल ने विश्वविद्यालय की फॉर्मूलरी की पहली प्रति और ष्संकल्प से सिद्धि पॉलिसी' की पहली प्रति राष्ट्रपति को भेंट की। इसके पूर्व राष्ट्रपति के सम्मान में स्वागत संबोधन करते हुए एमजीयूजी के कुलपति डॉ. सुरिंदर सिंह ने कहा

कि यह विश्वविद्यालय गोरक्षपीठ के ब्रह्मलीन महंतद्वय दिग्विजयनाथ जी और महंत अवेद्यनाथ जी के विचारों का मूर्त रूप है। इसका लक्ष्य आत्मनिर्भर भारत बनाने के लिए विद्यार्थियों को सशक्त बनाने का है।

माननीय राष्ट्रपति को स्मृति चिन्ह् भेंट करते माननीय मुख्यमंत्री

एवं माननीय राज्यपाल को पुस्तक भेंट करती माननीय राष्ट्रपति

लोकार्पण एवं शिलान्यास समारोह के दौरान माननीय राज्यपाल को स्मृति चिन्ह् भेंट करते माननीय कुलपति

एवं माननीय राष्ट्रपति को स्मृति चिन्ह् भेंट करते माननीय मुख्यमंत्री

आरोग्य पथ

मासिक ई-पत्रिका

स्वास्थ्य जागरूकता कार्यक्रम — फैकल्टी ऑफ नर्सिंग एंड पैरामेडिकल

पौष्टिक आहार और स्वास्थ्य के प्रति जागरूक करती नर्सिंग की छात्राएं

दिनांकः 07 जुलाई, 2025 को फैकल्टी ऑफ नर्सिंग एंड पैरामेडिकल, महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय, गोरखपुर के नर्सिंग विभाग में अध्ययनरत जीएनएम तृतीय वर्ष के 50 छात्राओं ने अपनी शिक्षकाओं मिस प्रज्ञा मिश्रा, मिस सुप्रिया श्रीवास्तव एवं मिस अभ्या प्रजापति के मार्गदर्शन में विभिन्न आयु वर्ग (पांच वर्ष से कम, किशोर, वयस्क एवं बुजुर्ग) के लिए विभिन्न क्लीनिक का आयोजन किया। इसमें कुल आयु वर्ग में लगभग 35–40 लोग उपस्थित थे। जिसमें उन्होंने पांच वर्ष से कम आयु में (मानवमितीय माप जैसे उनकी ऊंचाई, वजन, सिर की परिधि, छाती की परिधि, मध्य ऊपरी भुजा की परिधि, पेट की परिधि का आकलन किया), वयस्कों में (शारीरिक परीक्षण जैसे सिर से पैर तक सामान्य परीक्षण और विभिन्न शारीरिक प्रणालियों में परिवर्तन से संबंधित प्रणालीगत परीक्षण) किया साथ ही पर्याप्त आहार पद्धति, जीवनशैली में बदलाव और व्यक्तिगत स्वच्छता के बारे में स्वास्थ्य शिक्षा भी दी।

उन्होंने बच्चों को शिक्षा दी की, कभी भी खाने से पहले हाथ धोने की आदत डालें, बाथरूम जाने के बाद, बाहर खेलकर आने के बाद और किसी बीमारी के लक्षण महसूस होने पर हाथ अच्छे से धोने चाहिए। पानी का उपयोग करें, हाथों को कम से कम 20 सेकंड तक धोना चाहिए। दांतों को दो बार ब्रश करें। नाखूनों को नियमित रूप से काटना चाहिए। हमेशा स्वच्छ पानी पिएं, ताजे और साफ खाद्य पदार्थों का सेवन करें। कच्ची सब्जियां या फल खाने से पहले उन्हें अच्छी तरह से धोकर खाएं। बुजुर्गों को स्वास्थ्य शिक्षा देते हुए बताया कि बुजुर्गों का स्वास्थ्य उनके शारीरिक और मानसिक भलाई के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण होता है।

सही आहार और व्यक्तिगत स्वच्छता के द्वारा वे अपनी सेहत को बेहतर बना सकते हैं और जीवन को गुणवत्ता से भरपूर जी सकते हैं। बुजुर्गों को प्रोटीन, फाइबर, विटामिन और मिनरल्स से भरपूर भोजन खाना चाहिए।

स्वास्थ्य परीक्षण — फैकल्टी ऑफ नर्सिंग एंड पैरामेडिकल

ग्रामीणों का स्वास्थ्य परीक्षण करती नर्सिंग की छात्राएं

दिनांकः 08 जुलाई, 2025 को फैकल्टी ऑफ नर्सिंग एंड पैरामेडिकल, महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय, गोरखपुर के नर्सिंग विभाग में अध्ययनरत जीएनएम तृतीय वर्ष के 25 छात्राओं और एएनएम प्रथम वर्ष के 50 छात्राओं ने अपनी शिक्षकाओं मिस सृष्टि यादव, मिस सुधा यादव, मिस ज्योति वर्मा, मिस निधि, मिस शक्ति जयसवाल, मिस प्रिया सिंह, मिस कविता साहनी के मार्गदर्शन में बाबापुरवा और घुरहू टोला गांव, गोरखपुर में विभिन्न आयु वर्ग (पांच वर्ष से कम, किशोर, वयस्क एवं बुजुर्ग) के लिए विभिन्न क्लीनिक का आयोजन किया। इसमें कुल आयु वर्ग में लगभग 30–35 लोग उपस्थित थे। जिसमें उन्होंने पांच वर्ष से कम आयु में (मानवमितीय माप जैसे उनकी ऊंचाई, वजन, सिर की परिधि, छाती की परिधि, मध्य ऊपरी भुजा की परिधि, पेट की परिधि का आकलन किया),

वयस्कों में (शारीरिक परीक्षण जैसे सिर से पैर तक सामान्य परीक्षण और विभिन्न शारीरिक प्रणालियों में परिवर्तन से संबंधित प्रणालीगत परीक्षण) किया साथ ही पर्याप्त आहार पद्धति, जीवनशैली में बदलाव और व्यक्तिगत स्वच्छता के बारे में स्वास्थ्य शिक्षा भी दी।

उन्होंने बच्चों को शिक्षा दी की, कभी भी खाने से पहले हाथ धोने की आदत डालें, बाथरूम जाने के बाद, बाहर खेलकर आने के बाद और किसी बीमारी के लक्षण महसूस होने पर हाथ अच्छे से धोने चाहिए। पानी का उपयोग करें, हाथों को कम से कम 20 सेकंड तक धोना चाहिए। दांतों को दो बार ब्रश करें। नाखूनों को नियमित रूप से काटना चाहिए। हमेशा स्वच्छ पानी पिएं, ताजे और साफ खाद्य पदार्थों का सेवन करें। कच्ची सब्जियां या फल खाने से पहले उन्हें अच्छी तरह से धोकर खाएं। बुजुर्गों को स्वास्थ्य शिक्षा देते हुए बताया कि बुजुर्गों का स्वास्थ्य उनके शारीरिक और मानसिक भलाई के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण होता है। सही आहार और व्यक्तिगत स्वच्छता के द्वारा वे अपनी सेहत को बेहतर बना सकते हैं और जीवन को गुणवत्ता से भरपूर जी सकते हैं। बुजुर्गों को प्रोटीन, फाइबर, विटामिन, और मिनरल्स से भरपूर भोजन खाना चाहिए।

वृक्षारोपण कार्यक्रम : एक पेड़ मां के नाम

फैकल्टी ऑफ नर्सिंग एंड पैरामेडिकल

पौधरोपण के दौरान नर्सिंग की प्राचार्य डॉ. डी.एस. अजीथा एवं शिक्षिकाएं

दिनांकः 09 जुलाई, 2025 को फैकल्टी ऑफ नर्सिंग एंड पैरामेडिकल, महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय, गोरखपुर के नर्सिंग विभाग में 'एक पेड़ माँ के नाम' वृक्षारोपण कार्यक्रम का अयोजन किया गया। इस अवसर पर नर्सिंग कॉलेज की प्राचार्य डॉ. डी.एस. अजीथा, सभी संकाय सदस्यगण एवं छात्र–छात्राएं उपस्थित रहें।

कार्यक्रम का उद्देश्य न केवल पर्यावरण संरक्षण को बढ़ावा देना था, बल्कि मातृभूमि एवं मातृत्व के प्रति सम्मान प्रकट करना भी था। सभी उपस्थित परिजनों ने संकल्प लिया कि वे लगाए गए पौधों की देखभाल स्वयं करेंगे। संकाय प्रमुख ने अपने संबोधन में वृक्षों के महत्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि 'पेड़ हमारे जीवन का आधार हैं और हर पेड़ माँ की ममता की तरह हमें शीतलता और जीवन देते हैं।' छात्रों ने पूरे मनोयोग से पौधे लगाए और इस पहल को एक भावनात्मक और प्रेरणादायक रूप दिया। कार्यक्रम ने सभी को पर्यावरण संरक्षण एवं पारिस्थितिक संतुलन बनाए रखने के प्रति सजग किया।

स्वास्थ्य जागरूकता

फैकल्टी ऑफ नर्सिंग एण्ड पैरामेडिकल

ग्रामीणों का स्वास्थ्य परीक्षण करती नर्सिंग की छात्राएं

दिनांकः 09 जुलाई, 2025 को फैकल्टी ऑफ नर्सिंग एंड पैरामेडिकल, महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय, गोरखपुर के नर्सिंग विभाग में अध्ययनरत जीएनएम तृतीय वर्ष के शेष 25 छात्राओं ने अपनी शिक्षाकाओं मिस सुप्रिया श्रीवास्तव एवं मिस अभ्या प्रजापति के मार्गदर्शन में विभिन्न आयु वर्ग (पांच वर्ष से कम, किशोर, वयस्क एवं बुजुर्ग) के लिए विभिन्न क्लीनिक का आयोजन किया। इसमें कुल आयु वर्ग में लगभग 35–40 लोग उपस्थित थें। जिसमें उन्होंने पांच वर्ष से कम आयु में (मानवमितीय माप जैसे उनकी ऊंचाई, वजन, सिर की परिधि, छाती की परिधि, मध्य ऊपरी भुजा की परिधि, पेट

की परिधि का आकलन किया।

वयस्कों में (शारीरिक परीक्षण जैसे सिर से पैर तक सामान्य परीक्षण और विभिन्न शारीरिक प्रणालियों में परिवर्तन से संबंधित प्रणालीगत परीक्षण) किया साथ ही पर्याप्त आहार पद्धति, जीवनशैली में बदलाव और व्यक्तिगत स्वच्छता के बारे में स्वास्थ्य शिक्षा भी दी।

उन्होंने बच्चों को शिक्षा दी कीए कभी भी खाने से पहले हाथ धोने की आदत डालें, बाथरूम जाने के बाद, बाहर खेलकर आने के बाद और किसी बीमारी के लक्षण महसूस होने पर हाथ अच्छे से धोने चाहिए।

पानी का उपयोग करें, हाथों को कम से कम 20 सेकंड तक धोना चाहिए प् दांतों को दो बार ब्रश करें। नाखूनों को नियमित रूप से काटना चाहिए।
हमेशा स्वच्छ पानी पिएं, ताजे और साफ खाद्य पदार्थों का सेवन करें। कच्ची सब्जियां या फल खाने से पहले उन्हें अच्छी तरह से धोकर खाएं। बुजुर्गों को स्वास्थ्य शिक्षा देते हुए बताया कि बुजुर्गों का स्वास्थ्य उनके शारीरिक और मानसिक भलाई के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण होता है।

सही आहार और व्यक्तिगत स्वच्छता के द्वारा वे अपनी सेहत को बेहतर बना सकते हैं और जीवन को गुणवत्ता से भरपूर जी सकते हैं।

बुजुर्गों को प्रोटीन, फाइबर, विटामिन, और मिनरल्स से भरपूर भोजन खाना चाहिए।

स्वास्थ्य जागरूकता कार्यक्रम

फैकल्टी ऑफ नर्सिंग एण्ड पैरामेडिकल

नुक्कड़ नाटक के द्वारा ग्रामीणों को जागरूक एवं स्वास्थ्य परीक्षण करती नर्सिंग की छात्राएं

दिनांकः 09 जुलाई, 2025 को महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर के अंर्तगत संचालित नर्सिंग एवं पैरामेडिकल संकाय में एएनएम द्वितीय वर्ष में अध्ययनरत कुल 50 छात्राओं ने 2 समूह और शेष 50 छात्राओं ने 2 समूह में 4 शिक्षिकाओ (मिस सृष्टि यादव, मिस सुधा यादव, मिस ज्योति वर्मा और मिस निधि पासवान) के मार्गदर्शन में घुरहू टोला, चरगावा, गोरखपुरए में स्थित प्राथमिक विद्यालय में दंत स्वच्छता और व्यक्तिगत स्वच्छता पर स्कूल स्वास्थ्य कार्यक्रम और शेष 50 छात्राओं ने स्वास्थ्य शिविर का आयोजन किया।

स्कूल स्वास्थ्य कार्यक्रम के अंतर्गत कक्षा 5 तक के छात्र–छात्राएं उपस्थित थे जिसमें नुक्कड़ नाटक और चार्ट प्रस्तुति की मदद से दंत समस्याओं के सामान्य कारण और जोखिम कारक, इसके प्रबंधन और रोकथाम पर स्वास्थ्य शिक्षा प्रस्तुत की। उन्होंने दांतों की समस्याओं के बारे में बताया जैसे मीठा ज्यादा खाना (चॉकलेट, टॉफी और मिठाई खाने से कीड़े लगते हैं), ब्रश न करना (दांत गंदे रहते हैं और सड़ने लगते हैं), सख्त चीजें चबाना (पेंसिल या नाखून चबाने से दांत टूट सकते हैं), जंक फूड खाना (चिप्स और कोल्ड ड्रिंक से दांत कमजोर होते हैं), उन्होंने यह भी बताया कि दांतों की देखभाल हम अलग–अलग तारीके से कर सकते हैं जैसे–रोज ब्रश करें (सुबह और रात को सोने से पहले), खाने के बाद कुल्ला करें (मुंह साफ रखने के लिए), अच्छा खाना खाएं (फल और दूध से दांत मजबूत बनते हैं), चेकअप कराएं (6 महीने में एक बार डॉक्टर को दिखाएं), पानी पिएं (खाने के बाद पानी पीने से मुंह साफ रहता है) अंत में उन्होंने दांत खराब होने से बचने के उपाय बताये जैसे .मीठा कम खाएं (अगर खाएं तो कुल्ला जरूर करें), जंक फूड से बचे (सेहत और दांत दोनों के लिए खराब होता है), दांतों का ध्यान रखें (दांतों से नट्स या सख्त चीजें न तोड़ें), साफ–सफाई रखें (दांत और जीभ दोनों को ब्रश करें) और अगर हम अपने दांतों का ख्याल रखेंगे, तो हमेशा मजबूत और सुंदर दांत रहेंगे और व्यक्तिगत स्वच्छता के महत्व और उसके बारे में बताते हुए कहा की व्यक्तिगत स्वच्छता का महत्व हमारे शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य के लिए अत्यधिक महत्वपूर्ण है। यह न केवल हमें बीमारियों से बचाता है, बल्कि आत्मविश्वास को भी बढ़ाता है। और हाथों की सफाई के लिये हाथों को साबुन और पानी से कम से कम 20 सेकंड तक धोना चाहिए, विशेष रूप से भोजन से पहले, बाथरूम के उपयोग के बाद और गंदे स्थानों को छूने के बाद यदि साबुन और पानी उपलब्ध न हों, तो अल्कोहल. आधारित हैंड सैनिटाइज़र का उपयोग किया जा सकता है। त्वचा की स्वच्छता बनाए रखने

के लिए सही प्रकार के साबुन और शैम्पू का उपयोग करेंग नाखूनों को नियमित रूप से काटें और साफ रखें।

लंबे नाखूनों में गंदगी जमा हो सकती है जो बीमारियों का कारण बन सकती है। रोज़ाना साफ और सूती कपड़े पहनें। बिस्तर की चादरें और तकिए समय–समय पर धोते रहें, ताकि उन पर कोई बैक्टीरिया या गंदगी न रहें।

स्वच्छता का ध्यान रखते हुए खाना खाएं, साफ और ताजे खाने का सेवन करें और शेष 50 छात्राओं ने विभिन्न आयु वर्ग (पांच वर्ष से कम, किशोर, वयस्क एवं बुजुर्ग) के लिए विभिन्न क्लीनिक का आयोजन किया। इसमें कुल आयु वर्ग में लगभग 30.35 लोग उपस्थित थे।

जिसमें उन्होंने पांच वर्ष से कम आयु में (मानवमितीय माप जैसे उनकी ऊंचाई, वजन, सिर की परिधि, छाती की परिधि, मध्य ऊपरी भुजा की परिधि, पेट की परिधि का आकलन किया), वयस्कों में (शारीरिक परीक्षण जैसे सिर से पैर तक सामान्य परीक्षण और विभिन्न शारीरिक प्रणालियों में परिवर्तन से संबंधित प्रणालीगत परीक्षण) किया साथ ही पर्याप्त आहार पद्धति, जीवनशैली में बदलाव और व्यक्तिगत स्वच्छता के बारे में स्वास्थ्य शिक्षा भी दी।

उन्होंने बच्चों को शिक्षा दी की, कभी भी खाने से पहले हाथ धोने की आदत डालें, बाथरूम जाने के बाद, बाहर खेलकर आने के बाद और किसी बीमारी के लक्षण महसूस होने पर हाथ अच्छे से धोने चाहिए।

पानी का उपयोग करें, हाथों को कम से कम 20 सेकंड तक धोना चाहिए। दांतों को दो बार ब्रश करें। नाखूनों को नियमित रूप से काटना चाहिए। हमेशा स्वच्छ पानी पिएं, ताजे और साफ खाद्य पदार्थों का सेवन करें। कच्ची सब्जियां या फल खाने से पहले उन्हें अच्छी तरह से धोकर खाएं।

बुजुर्गों को स्वास्थ्य शिक्षा देते हुए बताया कि बुजुर्गों का स्वास्थ्य उनके शारीरिक और मानसिक भलाई के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण होता है।

सही आहार और व्यक्तिगत स्वच्छता के द्वारा वे अपनी सेहत को बेहतर बना सकते हैं और जीवन को गुणवत्ता से भरपूर जी सकते हैं। बुजुर्गों को प्रोटीन, फाइबर, विटामिन और मिनरल्स से भरपूर भोजन खाना चाहिए। बाद छात्रों को बच्चों को पुरस्कार और खाने की चीजें प्रदान की गईं।

स्वास्थ्य जागरूकता कार्यक्रम

फैकल्टी ऑफ नर्सिंग एण्ड पैरामेडिकल

प्राथमिक विद्यालय में अपशिष्ट प्रबंधन और अपथ्य आहार के दुष्प्रभावों के प्रति विद्यार्थियों को जागरूक करतीं नर्सिंग की छात्राएं

दिनांकः 10 जुलाई, 2025 को महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर के अंर्तगत संचालित नर्सिंग एवं पैरामेडिकल संकाय में एएनएम प्रथम वर्ष में अध्ययनरत कुल 50 छात्राओं ने 3 शिक्षिकाओ (मिस सृष्टि यादव, मिस सुधा यादव और मिस ज्योति वर्मा) के मार्गदर्शन में घुरहू टोला, चरगावा, गोरखपुर में स्थित प्राथमिक विद्यालय में अपशिष्ट निपटान और जंक फूड के दुष्प्रभावो पर स्कूल स्वास्थ्य कार्यक्रम का आयोजन किया। स्कूल स्वास्थ्य कार्यक्रम के अंतर्गत कक्षा 5 तक के छात्र–छात्राएं उपस्थित थे जिसमें नुक्कड़ नाटक और चार्ट प्रस्तुति की मदद से अपशिष्ट निपटान और जंक फूड के दुष्प्रभाव के बारे में स्वास्थ्य शिक्षा प्रस्तुत की। उन्होंने बताया की कचरा इधर–उधर न फेंके डस्टबिन का प्रयोग करें हाथ धोने की आदत डालें गीला और सूखा कचरा अलग करें, कचरे का निपटान हमारे पर्यावरण की सुरक्षा के लिए अत्यंत आवश्यक है, आजकल हर जगह बहुत अधिक कचरा फैल रहा है। यह कचरा जल, वायु और मिट्टी को प्रदूषित करता है। कचरा मुख्य रूप से दो प्रकार का होता है, सूखा कचरा और गीला कचरा, सूखे कचरे में प्लास्टिक, कागज, लोहा आदि आते हैं। गीले कचरे में सब्जियों के छिलके, बचा हुआ खाना आदि आते हैं। हमें कचरे को अलग–अलग डिब्बों में डालना चाहिए। हरे डिब्बे में गीला कचरा और नीले डिब्बे में सूखा कचरा। प्लास्टिक और अन्य गैर–बायोडिग्रेडेबल वस्तुओं का पुनः उपयोग करना चाहिए। जैविक कचरे से खाद बनाई जा सकती है जो पौधों के लिए लाभदायक होती है। कचरे को जलाना या इधर–उधर फेंकना पर्यावरण के लिए हानिकारक है। सरकार और नागरिकों को मिलकर स्वच्छता के लिए कार्य

करना चाहिए। श्स्वच्छ भारत अभियानश् एक अच्छा कदम है कचरे के सही निपटान की दिशा में। स्कूलों और घरों में बच्चों को स्वच्छता के महत्व के बारे में बताया जाना चाहिए। यदि हम कचरे का सही निपटान नहीं करेंगेए तो बीमारियाँ फैल सकती हैं। इसीलिए हमें हमेशा कचरा सही जगह पर फेंकना चाहिए और पर्यावरण को स्वच्छ रखना चाहिएएजंक फूड ऐसे खाद्य पदार्थ होते हैं जो स्वाद में तो अच्छे लगते हैंए लेकिन इनमें पोषक तत्वों की कमी होती है और ये स्वास्थ्य के लिए हानिकारक होते हैं। इसके अत्यधिक सेवन से कई तरह की शारीरिक और मानसिक समस्याएं हो सकती हैं।

जंक फूड में पोषक तत्वों की कमी होती है और यह शरीर को आवश्यक विटामिनए खनिजए और प्रोटीन नहीं देता। इससे कमजोरी और बीमारियों की संभावना बढ़ जाती हैएजंक फूड में फैटए चीनी और कैलोरी अधिक होती हैए जिससे वजन तेजी से बढ़ता है और मोटापा एक गंभीर समस्या बन जाती है। जंक फूड फाइबर से रहित होता हैए जिससे कब्जए गैस और अन्य पाचन संबंधी समस्याएं हो सकती हैं। अधिक तेल और ट्रांस फैट्स के कारण जंक फूड को नियमित रूप से खाने से कोलेस्ट्रॉल बढ़ता है और दिल की बीमारियों का खतरा बढ़ जाता हैएअत्यधिक चीनी युक्त जंक फूड का सेवन टाइप.2 डायबिटीज का खतरा बढ़ा सकता है।

शोध बताते हैं कि जंक फूड का अधिक सेवन तनावए चिड़चिड़ापन और डिप्रेशन जैसी मानसिक समस्याओं को बढ़ा सकता है। जंक फूड तुरंत ऊर्जा देता है लेकिन लंबे समय तक शरीर को थका देता हैए जिससे आलस्य और थकावट बनी रहती है। अत्यधिक तैलीय और मसालेदार भोजन से मुंहासेए बाल झड़ना और त्वचा से जुड़ी समस्याएं हो सकती हैं।

शरीर को जरूरी पोषक तत्व न मिलने से इम्यून सिस्टम कमजोर हो जाता है और बार.बार बीमारियाँ होती हैंएइसके बाद छात्रों को बच्चों को पुरस्कार और खाने की चीजें प्रदान की गईं।

विद्यालयी स्वास्थ्य कार्यक्रम

फैकल्टी ऑफ नर्सिंग एण्ड पैरामेडिकल

दंत क्षय एवं व्यक्तिगत स्वच्छता के प्रति जागरूक करतीं नर्सिंग की छात्राएं

दिनांकः 11 जुलाई, 2025 को फैकल्टी ऑफ नर्सिंग एंड पैरामेडिकल, महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय, गोरखपुर के नर्सिंग विभाग में अध्ययनरत जीएनएम तृतीय वर्ष के कुल 50 छात्राओं ने दो समूहों में अपनी शिक्षकाओं मिस सुप्रिया श्रीवास्तव, मिस अभ्या प्रजापति एवं मिस प्रज्ञा मिश्रा के मार्गदर्शन में ओंकार नगर स्थित जूही बाल विद्या महाविद्यालय में 'दंत क्षय एवं व्यक्तिगत स्वच्छता विषय पर विद्यालय स्वास्थ्य कार्यक्रम का आयोजन किया। कार्यक्रम का उद्देश्य ग्रामीण विद्यालय के बच्चों को मौलिक स्वास्थ्य जानकारी देना तथा स्वच्छता के महत्व को समझाना था। छात्राओं ने पोस्टर प्रदर्शन एवं नाट्य रूपांतरण (रोल प्ले) के माध्यम से विषय को रोचक एवं सरल तरीके से प्रस्तुत किया। इस कार्यक्रम के दौरान छात्राओं ने दंत क्षय के कारणों जैसे अत्यधिक मीठा खाना, दाँतों की सफाई न करना और दंत चिकित्सक के पास समय–समय पर न जाना आदि पर प्रकाश डाला।

उन्होंने बताया कि दंत क्षय से मुँह की दुर्गंध, दाँतों में कीड़ा लगना, मसूड़ों में सूजन आदि समस्याएं हो सकती हैं। साथ ही नियमित ब्रश करना, दिन में दो बार मुँह की सफाई करनाए और समय–समय पर दंत चिकित्सक से जांच करवाने की महत्ता पर बल दिया गया।

व्यक्तिगत स्वच्छता पर बच्चों को मौखिक सफाई, बालों और नाखूनों की सफाई, सही तरीके से हाथ धोना, भोजन की स्वच्छता तथा मासिक धर्म स्वच्छता के बारे जानकारी दी गई। छात्राओं ने समझाया कि यदि व्यक्तिगत स्वच्छता का ध्यान न रखा जाए तो त्वचा रोग, पेट के संक्रमण, फंगल इंफेक्शन, पसीने की दुर्गंध, दस्त, टायफाइड, पीलिया और मासिक धर्म से संबंधित बीमारियाँ हो सकती हैं। वहीं, स्वच्छता अपनाने से न केवल शरीर स्वस्थ रहता है, बल्कि आत्मविश्वास भी बढ़ता है और दूसरों के बीच एक अच्छा प्रभाव पड़ता है। छात्राओं ने 7 चरणों में हाथ धोने की विधि को भी प्रदर्शन के माध्यम से सिखाया।

इस स्वास्थ्य कार्यक्रम ने बच्चों में स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता और जिम्मेदारी की भावना को बढ़ावा दिया तथा कार्यक्रम के अंत में विद्यालय के प्रधानाचार्य और शिक्षकों ने छात्राओं की इस सकारात्मक पहल की सराहना की।

समझौता ज्ञापन | महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय

समझौता ज्ञापन के दौरान माननीय कुलपति, माननीय कुलसचिव, डॉ. ज्ञानेंद्र प्रताप सिंह एवं अन्य

दिनांकः 11 जुलाई, 2025 को महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर के कुलपति डॉ. सुरिंदर सिंह, कुलसचिव डॉ. प्रदीप कुमार राव व निदेशक राष्ट्रीय पादप आनुवंशिक संसाधन ब्यूरो (एनबीपीजीआर) डॉ. ज्ञानेंद्र प्रताप सिंह के उपस्थिति में दोनों प्रतिष्ठित संस्थानों के मध्य समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किये गए।

इस समझौता ज्ञापन के द्वारा कृषि क्षेत्र में छात्रों की शिक्षा एवं अनुसंधान बढ़ावा देने में सहायता प्राप्त होगी, साथ ही संस्थानों द्वारा विकसित तकनीकियों को साझा भी किया जाएगा तथा पादप आनुवंशिक संसाधन के क्षेत्र में उन्नत तकनीकी के विस्तारीकरण पर भी एक साथ उन्नत शोध कार्य किया जाना संभव होगा।

समझौता के माध्यम से छात्रों व प्राध्यापकों को पादप आनुवंशिक संसाधन विषय सम्बंधित कार्यशाला, प्रशिक्षण, शोध कार्य, ग्रामीण कृषि कार्य अनुभव इत्यादि से भी लाभान्वित किया जा सकेगा।

समझौता ज्ञापन के समय विश्वविद्यालय के समझौता ज्ञापन समन्वयक डॉ. विमल कुमार दुबे, विभागाध्यक्ष आनुवंशिकी और पादप प्रजनन सैम हिगिनबॉटम कृषि डॉ. वैदूर्य प्रताप शाही, प्रौद्योगिकी और विज्ञान विश्वविद्यालय, एनबीपीजीआर के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. कुलदीप त्रिपाठी, डॉ. नागेंद्र कुमार सिंह, डॉ. प्रशांत कुमार राय व कृषि संकाय के प्राध्यापक डॉ. विकास कुमार यादवए डॉ. आयुष कुमार पाठक व डॉ. सास्वती प्रेमकुमारी उपस्थित रहें।

स्वास्थ्य जागरूकता कार्यक्रम | फैकल्टी ऑफ नर्सिंग एण्ड पैरामेडिकल

प्राथमिक विद्यालय के बच्चों को स्वास्थ्य के प्रति जागरूक करतीं छात्राएं

दिनांकः 12 जुलाई, 2025 को फैकल्टी ऑफ नर्सिंग एंड पैरामेडिकल, महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय, गोरखपुर के नर्सिंग विभाग में अध्ययनरत जीएनएम तृतीय वर्ष के शेष 50 छात्राओं ने दो समूहों में अपनी शिक्षाकाओं मिस शक्ति, मिस अभ्या प्रजापति एवं मिस प्रज्ञा मिश्रा के मार्गदर्शन में ओंकार नगर स्थित जूही बाल विद्या महाविद्यालय में 'घर में होने वाली दुर्घटनाओं से सुरक्षा' और 'कीड़े की समस्या से बचाव' विषय पर रोल प्ले और चार्ट पेपर प्रेजेंटेशन के माध्यम से विद्यालय

स्वास्थ्य कार्यक्रम का आयोजन किया। कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य स्कूली बच्चों, को स्वास्थ्य से जुड़ी आम लेकिन गंभीर समस्याओं के प्रति जागरूक करना था।

उन्होंने बताया की घर में होने वाली दुर्घटनाओं जैसे–सीढ़ियों से गिरना, गैस सिलेंडर का रिसाव और धारदार वस्तुओं से चोट लगना–ये सभी ऐसी घटनाएँ हैं जो थोड़ी सी लापरवाही से गंभीर परिणाम ला सकती हैं। इस विषय का उद्देश्य बच्चो को यह सिखाना था कि कैसे घरेलू सतर्कता से इन दुर्घटनाओं को टाला जा सकता है। इसके अंतर्गत सीढ़ियों में रोशनी और ग्रिल का प्रयोग, गैस सिलेंडर की समय–समय पर जांचए तथा धारदार वस्तुओं को बच्चों की पहुँच से दूर रखना जैसे उपाय बताए गए। यदि इन उपायों की अनदेखी की जाए, तो इसका परिणाम जलना, हड्डी टूटना, घातक चोट या जान का खतरा भी हो सकता है। बच्चों के माध्यम से यह संदेश प्रभावशाली रूप में प्रस्तुत किया गया।

वहीं, कीड़े की समस्या पर छात्राओं ने व्यक्तिगत स्वच्छता, साबुन से हाथ धोना, साफ पानी पीना, और संतुलित भोजन पर ज़ोर दिया। यह विषय बच्चों के लिए विशेष रूप से महत्वपूर्ण है क्योंकि यह समस्या उनके शारीरिक विकास, पढ़ाई और समग्र स्वास्थ्य को प्रभावित करती है।

अगर समय पर ध्यान न दिया जाए तो इसके कारण एनीमिया, पेट दर्द, वजन कम होना और मानसिक थकावट जैसी समस्याएँ उत्पन्न हो सकती हैं। इससे बचाव के लिए नियमित रूप से डिवॉर्मिंग दवा देना, साफ–सफाई का पालन करना और आशा कार्यकर्ताओं की मदद से स्वास्थ्य शिक्षा लेना जरूरी है। इस कार्यक्रम ने बच्चों को यह समझाया कि स्वास्थ्य की रक्षा हमारे अपने छोटे–छोटे प्रयासों से ही संभव है। इस स्वास्थ्य कार्यक्रम ने बच्चों में स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता और जिम्मेदारी की भावना को बढ़ावा दिया तथा कार्यक्रम के अंत में विद्यालय के प्रधानाचार्य और शिक्षकों ने छात्राओं की इस सकारात्मक पहल की सराहना की।

दीक्षारंभ समारोह

महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय

दीक्षारंभ समारोह में सम्बोधित करते हुए डॉ. रघुराम अचार

दिनांकः 15 जुलाई, 2025 को महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर के अंतर्गत संचालित फैकल्टी ऑफ नर्सिंग एवं पैरामेडिकल में संचालित विभिन्न पाठ्यक्रम जैसे एएनएम, बीएससी नर्सिंग, पोस्ट बेसिक नर्सिंग, डिप्लोमा इन लैब तकनीशियन, डिप्लोमा इन ऑप्टोमेट्री, डिप्लोमा इन डायलिसिस, डिप्लोमा इन इमरजेंसी एंड ट्रॉमा केयर, डिप्लोमा इन एनेस्थीसिया एंड क्रिटिकल केयर तकनीशियन व डिप्लोमा इन ऑर्थोपेडिक एंड प्लास्टर केयर तकनीशियन के विद्यार्थियों की उपस्थिति में दीक्षारंभ समारोह, अतिथियों द्वारा द्वीप प्रज्वलन व मां सरस्वती की वंदना के साथ आरम्भ हुआ।

कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में डीन आई.क्यू.ए.सी. डॉ. रघुराम आचार्य, साथ ही उप प्रधानाचार्या नर्सिंग श्रीमती प्रिंसी जॉर्ज व प्रधानाचार्य पैरामेडिकल श्री रोहित कुमार श्रीवास्तव मौजूद रहें।

कार्यक्रम का संचालन श्री अनूप कुमार मिश्रा द्वारा किया गया। मुख्य अतिथि डॉ. रघु राम आचार्य ने नर्सिंग व पैरामेडिकल के नवप्रवेशित विद्यार्थियों को स्वागत भाषण देकर संबोधित किया।

उनके द्वारा विद्यार्थियों को पारस्परिक संबंध व साथ ही अपने कर्तव्यों का सफलतापूर्वक निर्वहन करने कि सलाह दी।

नर्सिंग कॉलेज की उप प्रधानाचार्या श्रीमती प्रिंसी जॉर्ज ने बताया कि नर्सिंग व पैरामेडिक्स को मरीजों के साथ जुड़ के उनके उपचार में सहयोग करना चाहिए।

पैरामेडिकल विभाग के प्रधानाचार्य श्री रोहित कुमार श्रीवास्तव ने विद्यार्थियों को आत्मविश्वास के साथ ज्ञान अर्जित करने की सलाह दी।

कार्यक्रम को सफल बनाने में राष्ट्रीय सेवा योजना के स्वयंसेवक निधि सिंह, कु. आकांक्षा, निपेंद्र सिंह, सचिन गुप्ता, धनंजय अग्रहरि व शिक्षकगण श्री आकाश वर्मा, श्री कुलदीप यादव, श्री जय शंकर पांडे, सुश्री आकांक्षा दीक्षित, श्री विशाल की सफल भूमिका रही।

अतिथि व्याख्यान

गुरु गोरक्षनाथ इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज

स्वस्थ जीवन शैली विषय पर व्याख्यान देते हुए डॉ. जी.एस. तोमर

दिनांकः 16 जुलाई, 2025 को महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय के गुरु गोरक्षनाथ इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज़ में आरोग्य भारती के सहयोग से प्रायोजित एक अतिथि व्याख्यान का आयोजन किया गया। जिसकी अध्यक्षता मॉडर्न मेडिसिन के डीन प्रो. (डॉ.) चन्द्रशेखर मूर्ति ने की। आरोग्य भारती के गोरक्षप्रांत के अध्यक्ष डॉ. डी.पी. सिंह विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित रहें। भगवान धन्वंतरि के पूजन अर्चन के बाद आयुर्वेद संस्थान के प्राचार्य डॉ. गिरिधर वेदान्तम ने स्वागत भाषण दिया। इसके उपरांत अपने उद्‌बोधन में विश्व आयुर्वेद मिशन के संस्थापक अध्यक्ष एवं आरोग्य भारती के राष्ट्रीय कार्यकारिणी सदस्य प्रो. (डॉ.) जी.एस. तोमर ने मुख्य अतिथि के रूप में 'स्वस्थ जीवन शैली' पर विस्तृत व्याख्यान दिया। उन्होंने बताया कि आरोग्य भारती स्वास्थ्य संरक्षण एवं संवर्धन के क्षेत्र में कार्य कर रहा एक देश व्यापी स्वयंसेवी संगठन है। काश्मीर से कन्याकुमारी तक लगभग सभी जिलों में इसके कार्यकर्ता सक्रिय हैं। सन 2002 में कोची से प्रारंभ हुआ यह संगठन राष्ट्रीय संगठन सचिव डॉ. अशोक कुमार वार्ष्णेय के कुशल नेतृत्व में देश भर में स्वास्थ्य संरक्षण के क्षेत्र में नए नए आयाम स्थापित कर रहा है। उन्होंने बताया कि विश्व स्वास्थ्य संगठन का ध्यान वर्तमान में संक्रामक रोगों से हटकर नॉन कम्युनिकेबल रोगों की तरफ आकृष्ट हो रहा है। इन रोगों को जीवनशैली जन्य रोग भी कहते हैं। चिकित्सा वैज्ञानिकों के अनुसार पचहत्तर प्रतिशत से अधिक जीवनशैली जन्य रोगों को जीवनशैली को सुधार कर रोका जा सकता है। डायबिटीज़, हाइपरटेंशन, अर्थराइटिस, अस्थमा, कैंसर, आईबीएस, महिलाओं में पीसीओएस आदि बीमारियों की निरन्तर बढ़ती हुई संख्या विकृत जीवनशैली का ही परिणाम है। उन्होंने बताया कि आयुर्वेद में आहार, निद्रा और ब्रह्मचर्य जीवन के तीन उपस्तंभ बताए गए हैं। हमारा आहार ही स्वास्थ्य एवं रोग दोनों का कारण है। भोजन का चयन हमेशा प्रकृति, देश, काल एवं ऋतु के अनुसार करना चाहिए। पिज़्ज़ा, नूडल्स एवं बर्गर की पाश्चात्य संस्कृति आज की युवा पीढ़ी की पहली पसंद बनती जा रही है जिसके कारण हमारे पारंपरिक व्यंजन भारतीय रसोई से ग़ायब होते जा रहे हैं। ज्वार, बाजरा, साँवा, कोदों, कुटकी, चौना, कुट्टू रामदाना जैसे मिलेट्स देखते ही देखते हमारी थाली से दूर हो गए हैं। कार्य की व्यस्तता के चलते हम समय पर भोजन नहीं कर पाते। अधिक मानसिक तनाव हमारे पाचनतंत्र को बुरी तरह प्रभावित करता है। परिणामस्वरूप देखते ही देखते हम अनेक मनोदैहिक रोगों की चपेट में आते जा रहे हैं। शाम के आठ बजे के पहले हमें स्वल्प मात्रा में रात्रि भोजन अवश्य कर लेना चाहिये क्योंकि हमारे शरीर के अधिकांश अंग रात में चयापचय के कार्य को बंद कर देते हैं। परिणामस्वरूप देर रात में मात्रा से अधिक किया गया भोजन अनेक रोगों को जन्म देता है। डॉ. तोमर ने ज़ोर देकर कहा कि ब्राह्म मुहूर्त में उठकर योग, व्यायाम एवं प्रशस्त जीवनशैली अपना कर व्यक्ति चिरकाल तक स्वस्थ जीवन जी सकता है। इसीलिए स्वस्थ जीवनशैली को आरोग्य का मूलमंत्र माना गया है। इसके अलावा सकारात्मकता जीवन की गुणवत्ता में चार चाँद लगा देती है।

संस्थान की विशिष्टता बताते हुए उन्होंने कहा एक ही छत के नीचे एमबीबीएस एवं बीएएमएस छात्रों को प्रशिक्षित करता यह संस्थान महामना पं. मदनमोहन मालवीय द्वारा संस्थापित काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के बाद दूसरा है। युगदृष्टा यशस्वी मुख्यमंत्री माननीय योगी आदित्यनाथ जी का यह मॉडल देश ही नहीं विश्व को एक नई दिशा देने की ओर अग्रसर है। अपने अध्यक्षीय उद्‌बोधन में डॉ. मूर्ति ने जीवनशैली को संयमित करने पर बल दिया एवं विविध विधाओं के ज्ञान के एकीकरण को आज की आवश्यकता बताया। इस अवसर पर संस्थान के प्राध्यापकों के साथ–साथ महंत दिग्विजयनाथ आरोग्य धाम के चिकित्सक, फार्मेसी कॉलेज के प्राचार्य डॉ. शशिकांत सिंह, एमबीबीएस, बीएएमएस एवं फार्मेसी के लगभग 300 छात्रों ने प्रतिभाग किया। अंत में फार्मेसी कॉलेज के प्राचार्य डॉ. शशिकांत सिंह ने धन्यवाद ज्ञापन एवं शांति पाठ कर कार्यक्रम का समापन किया।

नि:शुल्क चिकित्सा शिविर

महंत दिग्विजयनाथ आयुर्वेद चिकित्सालय

रोगियों का स्वास्थ्य परीक्षण करते हुए डॉ. जी.एस. तोमर

दिनांक: 16 जुलाई, 2025 को महंत दिग्विजयनाथ आयुर्वेद चिकित्सालय द्वारा प्रति माह नि:शुल्क चिकित्सा शिविर का आयोजन किया जाता है। जिसमें विश्व आयुर्वेद मिशन के अन्तर्राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं ख्याति लब्ध आयुर्वेद चिकित्सक डॉ. जी. एस. तोमर द्वारा रोगियों को परामर्श प्रदान किया जाता है। 16 जुलाई को डॉ. तोमर ने सौ से अधिक रोगियों का परीक्षण कर चिकित्सा परामर्श प्रदान किया। इस अवसर पर एमिल फार्मास्युटिकल के सौजन्य ने नि:शुल्क हड्डियों की जाँच (बीएमडी) भी की गई। डॉ. तोमर ने बताया कि आयुर्वेद सिद्धांतों के अनुसार वर्षा ऋतु में वात दोष का प्रकोप स्वाभाविक रूप से होता है। अतः इस समय गठिया आदि वात दोष से पीड़ित रोगियों की संख्या सबसे अधिक है। उन्होंने बताया कि तेल वात विकारों में बहुत प्रभावी होता है। अतः तिल, सरसों एवं मूँगफली का तेल भोजन में अवश्य प्रयोग करें।

पत्ते वाली सब्ज़ियों का प्रयोग न करें। वैदिक साहित्य में वर्षा ऋतु में 'हित भुक, मित भुक, अशाक भुक' कहकर हितकारी, भूख से कुछ कम मात्रा में बिना पत्ते वाली सब्ज़ियों के सेवन करने का निर्देश दिया है, जो पूर्णतः वैज्ञानिक है।

व्यवहारिक प्रशिक्षण

फैकल्टी ऑफ नर्सिंग एंड पैरामेडिकल

'प्राइमर ऑन क्रिटिकल केयर नर्सिंग' पर व्यवहारिक प्रशिक्षण देते हुए श्री संदीप जैन

दिनांक: 18 जुलाई, 2025 को फैकल्टी ऑफ नर्सिंग एंड पैरामेडिकल, महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय, गोरखपुर के नर्सिंग विभाग में प्रशिक्षण एवं प्लेसमेंट सेल द्वारा आयोजित ओत्सुका फार्मास्युटिकल लिमिटेड द्वारा, 'प्राइमर ऑन क्रिटिकल केयर नर्सिंग' पर एक दिवसीय हैंड्स–ऑन प्रशिक्षण सत्र का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर कार्यक्रम में ओत्सुका कंपनी से आए निम्न्न विशेषज्ञ–श्री संदीप जैन (डिविज़नल हेड, दिल्ली), श्री प्रेम पाठक (सेंक्शन मैनेजर) एवं श्री भूपेश सिंह (सीनियर प्रोसेस इंचार्ज) और प्रशिक्षण एवं प्लेसमेंट सेल के निदेशक डॉ.

एमएन पुरोहित तथा नर्सिंग कॉलेज की छात्राएं एवं सभी संकाय सदस्यगण उपस्थित थे।

सत्र का उद्देश्य छात्राओं को गहन चिकित्सा नर्सिंग के नवीनतम सिद्धांतों और प्रैक्टिकल दृष्टिकोण से अवगत कराना था।

प्रशिक्षण के दौरान क्रिटिकल केयर नर्सिंग की मूल अवधारणाओं, गंभीर रोगियों की देखभाल, रोग की तीव्र स्थिति में त्वरित निर्णय लेने की प्रक्रिया पर चर्चा की गई।

साथ ही इंट्रावेनस फ्लूइड थेरेपी की वैज्ञानिकता, उचित द्रव चयन, फ्लूइड ओवरलोड से बचाव जैसे सिद्धांतों पर भी प्रकाश डाला गया।

हेल्थकेयर-एसोसिएटेड इन्फेक्शन्स की रोकथाम हेतु हैंड हाइजीन, सैनिटेशन और संक्रमण नियंत्रण उपायों की व्यावहारिक जानकारी दी गई।

कार्यक्रम में ओत्सुका कंपनी से आए विशेषज्ञ ने सहभागियों को विषयवस्तु से गहराई से जोड़ा और प्रशिक्षण को ज्ञानवर्धक व संवादात्मक बनाया।

कार्यक्रम के अंत में प्रतिभागियों ने कार्यक्रम को अत्यंत लाभकारी एवं प्रेरणादायक बताया।

अतिथि व्याख्यान

कृषि संकाय

प्राकृतिक खेती के बारे में बताते हुए डॉ. अरविंद कुमार सिंह

दिनांकः 22 जुलाई, 2025 को महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय के अंतर्गत संचालित कृषि संकाय में आज एक विशेष अतिथि व्याख्यान का आयोजन किया गया। जिसमें संयुक्त कृषि निदेशक, गोरखपुर मंडल, डॉ. अरविंद कुमार सिंह ने छात्रों को संबोधित किया। इस व्याख्यान का उद्देश्य विद्यार्थियों को प्राकृतिक खेती, कृषि का इतिहास, वर्तमान चुनौतियाँ तथा कृषि क्षेत्र के भविष्य से अवगत कराना था।

कार्यक्रम की शुरुआत में कृषि संकाय के अधिष्ठाता डॉ. विमल कुमार दुबे ने स्मृति चिह्न भेंट कर मुख्य अतिथि का स्वागत किया। अपने व्याख्यान में डॉ. अरविंद कुमार सिंह ने प्राकृतिक खेती को किसानों के लिए एक अनमोल वरदान बताते हुए इसके लाभों की विस्तार से जानकारी दी।

उन्होंने कहा कि 'प्राकृतिक खेती न केवल पर्यावरण अनुकूल है, बल्कि यह किसानों को आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में एक प्रभावी कदम भी है।'

डॉ. सिंह ने भारतीय कृषि के इतिहास पर प्रकाश डालते हुए किसानों की वर्तमान समस्याओं जैसे बढ़ती लागत, जलवायु परिवर्तन और बाजार की अनिश्चितताओं पर चर्चा की। साथ ही, उन्होंने कृषि के सतत एवं तकनीकी विकास की संभावनाओं को भी रेखांकित किया।

इस अवसर पर डॉ. विकास यादव, डॉ. आयुष कुमार पाठक, डॉ. सस्वाती प्रेमकुमारी, डॉ. नवनीत सिंह, फील्ड मैनेजर श्री सुरेश निषाद एवं कृषि संकाय के समस्त छात्र-छात्राएँ उपस्थित रहे।

कार्यक्रम का सफल संचालन विश्वविद्यालय के कृषि संकाय के छात्र विकास यादव द्वारा किया गया। छात्रों ने डॉ. सिंह के व्याख्यान को अत्यंत उपयोगी और प्रेरणादायक बताया।

स्वर्णप्राशन संस्कार शिविर

गुरु गोरक्षनाथ इंस्टिट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेस

बच्चों को स्वर्णप्राशन कराते हुए चिकित्सकगण

दिनांकः 25 जुलाई, 2025 को गुरु गोरक्षनाथ इंस्टिट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेस, बालापार सुवर्णप्राशन संस्कार उत्सव के रूप में सम्पन्न पूर्वांचल के प्रसिद्ध भजन गायक अमित अंजन ने किया शुभारंभ गुरु गोरक्षनाथ इंस्टिट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेस, बालापार के आयुर्वेद शिशु एवं बाल रोग विभाग में आज सुवर्णप्राशन संस्कार को एक उत्सव के रूप में सम्पन्न किया गया।

शुभारंभ पूर्वांचल के ख्याति प्राप्त भजन गायक श्री अमित अंजन द्वारा किया गया, जो मलवेरी स्कूल, सिसवा महराजगंज के सैकड़ों विद्यार्थियों के साथ कार्यक्रम में शामिल हुए। उनकी धर्मपत्नी एवं विद्यालय की निदेशक डॉ. शुभ्रा अंजन ने भी सहभागिता कर सुवर्णप्राशन जैसे प्राचीन एवं वैज्ञानिक संस्कार के प्रति अपनी निष्ठा एवं जागरूकता प्रकट की।

कार्यक्रम संयोजक एवं विभागाध्यक्ष डाण् त्रिविक्रम मणि त्रिपाठी ने बताया कि सुवर्णप्राशन बच्चों की रोग प्रतिरोधक क्षमताए बुद्धि और स्मृति को बढ़ाने वाली निरापद व प्रभावी प्रक्रिया है।

इस अवसर पर डॉ. अवनीश

कुमार द्विवेदी (चिकित्सा अधीक्षक) प्रो. डॉ. गिरिधर वेदांतम (प्राचार्य), डॉ. सुमित कुमार नायर (उप–प्राचार्य) के साथ–साथ डॉ. दीक्षा, डॉ. श्रीलक्ष्मी एवं अनेक अधिकारी, चिकित्सक एवं शिक्षकगण उपस्थित रहें।

कार्यक्रम के अंत में यह निर्णय लिया गया कि प्रत्येक पुष्य नक्षत्र पर सुवर्णप्राशन संस्कार को उत्सव की भांति मनाया जाएगा ताकि यह प्राचीन एवं उपयोगी आयुर्वेदिक प्रक्रिया अधिकाधिक लोगों तक पहुँचे और जनसामान्य लाभान्वित हो।

कारगिल विजय दिवस

महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर

शहीदों को श्रद्धांजलि देते हुए एवं विद्यार्थियों को सम्बोधित करते ब्रिगेडियर परिमल भारती

दिनांकः 26 जुलाई, 2025 को कारगिल विजय दिवस पर महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर राष्ट्रीय कैडेट कोर के 102 यू. पी. बटालियन गोरखपुर एवं राष्ट्रीय सेवा योजना के संयुक्त तत्वाधान में कारगिल वीर योद्धाओं (शहीदों) को पुष्पांजलि अर्पण कर जयघोष के साथ श्रद्धांजलि अर्पित किया गया ।

गोरखा रेजिमेंट डिपो कूड़ाघाट पर ब्रिगेडियर परिमल भारती ने कारगिल योद्धाओं को श्रद्धासुमन अर्पित करते हुए कहा कि कारगिल विजय दिवस एक ऐसा पर्व है जो हमारे सैनिकों की असाधारण वीरता, बलिदान और समर्पण को श्रद्धांजलि देता है। यह दिवस हमें याद दिलाता है कि स्वतंत्रता और संप्रभुता की रक्षा के लिए हमारे सैनिक दिन.रात सीमाओं पर डटे रहते हैं। हमें उनके प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करनी चाहिए और राष्ट्र निर्माण में अपनी भूमिका निभानी चाहिए।

कारगिल विजय दिवस भारतीय सैन्य इतिहास का एक गौरवशाली पर्व है, जो हर वर्ष 26 जुलाई को मनाया जाता है। यह दिन वर्ष 1999 में कारगिल युद्ध में भारतीय सशस्त्र बलों की ऐतिहासिक विजय की याद में समर्पित है। यह केवल एक युद्ध की जीत नहीं थी, बल्कि यह भारतीय सैनिकों की बहादुरी, आत्मबलिदान, देशभक्ति और अदम्य साहस का प्रतीक बन गया।

यह दिन हमें हमारे वीर जवानों के शौर्य और बलिदान की गाथा सुनाता है, जिन्होंने मातृभूमि की रक्षा के लिए अपने प्राणों की आहुति दे दी।

विश्वविद्यालय में आयोजित कारगिल विजय दिवस पुष्पांजलि में डिप्टी कमांडेंट कर्नल विशाल दुबे ने कारगिल युद्ध के संस्मरण को याद करते हुए कहा कि कारगिल युद्ध 1999 में पाकिस्तान की सेना और घुसपैठियों ने कारगिल सेक्टर के भारतीय क्षेत्र में गुपचुप तरीके से घुसपैठ कर ऊँची चोटियों पर कब्जा कर लिया। इस घुसपैठ को 'ऑपरेशन बद्र' नाम दिया गया था। भारतीय सेना ने इस घुसपैठ का जवाब देने के लिए 'ऑपरेशन विजय' शुरू किया। 8 सप्ताह से अधिक समय तक चले इस अभियान में भारतीय सेना ने एक–एक कर सभी कब्जाई गई चोटियों को दुश्मन से मुक्त कराया।

इस ऑपरेशन में भारतीय वायुसेना ने भी 'ऑपरेशन सफेद सागर' के अंतर्गत अहम भूमिका निभाई। संकटपूर्ण भौगोलिक स्थिति, कठिन मौसम, बर्फीली ऊँचाइयाँ और दुश्मन की किलेबंदी के बावजूद भारतीय सैनिकों ने अद्वितीय साहस का परिचय दिया। यह एक असामान्य युद्ध था क्योंकि इसमें लड़ाई 16,000 फीट की ऊँचाई पर लड़ी गई थी, जहाँ ऑक्सीजन की कमी और तापमान .10 से .20 डिग्री सेल्सियस तक पहुँच जाता है।

कारगिल युद्ध में कई ऐसे वीर सपूत हुए जिन्होंने असाधारण साहस दिखाया और देश के लिए अपने प्राण न्योछावर कर दिए।

अडम आफिसर लेफ्टिनेंट कर्नल मिथुन मिश्रा ने कारगिल युद्धाओं को पुष्प अर्पण करते हुए कहा कि कारगिल विजय दिवस केवल एक युद्ध विजय का प्रतीक नहीं है, बल्कि यह देशभक्ति, एकता, त्याग और राष्ट्र प्रेम की भावना को जीवित रखने का दिन है। यह दिन हमें यह याद दिलाता है कि देश की सुरक्षा सर्वोपरि है और इसके लिए किसी भी बलिदान से पीछे नहीं हटना चाहिए।

एएनओ लेफ्टिनेंट डॉ. संदीप कुमार श्रीवास्तव ने कहा कि कारगिल विजय दिवस भारत

के युवाओं के लिए प्रेरणास्त्रोत है।

यह उन्हें यह सिखाता है कि सच्चा देशभक्त वही होता है जो निःस्वार्थ होकर राष्ट्र की सेवा करे। यह दिन युवाओं को सेना में जाने, अनुशासन को जीवन में अपनाने और देशहित को सर्वोच्च मानने की प्रेरणा देता है।

आयोजन में कुलपति डॉ. सुरिंदर सिंह, कुलसचिव डॉ. प्रदीप राव जी, उपकुलसचिव श्रीकांत, प्रशासनिक अधिष्ठाता डॉ. प्रशांत एस. मूर्ति, प्राचार्य डॉ. अधिष्ठाता डॉ. सुनील कुमार सिंह, डॉ. विमल कुमार दुबे, डॉ. शशिकांत सिंह, डॉ. रोहित श्रीवास्तव, डॉ. अखिलेश दुबे दिलीप मिश्रा, पीयूष आनंद, दीपक कुमार, अनिल कुमार, अमित कुमार उपाध्याय, नीरज कुमार, जनमेजय सोनी, कैडेट आदित्य सिंह, नीलेश यादव, अभिषेक मिश्रा, अरुण विश्वकर्मा, आलोक दीक्षित, मनीष गुप्ता, अनुभव पाण्डेय, शिखर, पाण्डेय, अमन चौरसिया, आलोक सिंह, प्रीति शर्मा, आंचल पाठक, काजल गौतम, चांदनी निषाद, खुशी यादव, संजना शर्मा, अतीका तिवारी, वसुंधरा सिंह, उजाला सिंह, अर्पिता राय, अनुराधा, गुड़िया कुशवाहा, आदित्य सिंह, अभिषेक चौरसिया, शिवम सिंह सहित शिक्षकगण, विद्यार्थीगण, कर्मचारियों सहित राष्ट्रीय कैडेट कोर और राष्ट्रीय सेवा योजना के स्वयं सेवकों ने देश के वीर योद्धाओं को पुष्पांजलि अर्पण कर अपने भावों से श्रद्धांजलि अर्पण किया।

महर्षि चरक जयन्ती समारोह

गुरु गोरक्षनाथ इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज

महर्षि चरक जयंती पर संस्कृत संभाषा एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन

दिनांकः 26 जुलाई, 2025 को महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय अन्तर्गत गुरु गोरक्षनाथ इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज आयुर्वेद कॉलेज में चरक जयन्ती के अवसर पर चरक संहिता का वैश्विक चिकित्सा में योगदान विषय पर रंगोली प्रतियोगिता, पोस्टर प्रतियोगिता और नाट्य मंचन का आयोजन किया गया। सभी विद्यार्थियों ने चरक संहिता का परायण भी किया।

विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए प्राचार्य गिरधर वेदांतम ने कहा कि महर्षि चरक केवल एक वैद्य ही नहीं, बल्कि भारत की प्राचीन चिकित्सा परंपरा के स्तंभ थे। महर्षि का दृष्टिकोण केवल रोग निवारण तक सीमित नहीं थाए बल्कि उन्होंने स्वस्थ जीवनशैली, आहार–विहार, दिनचर्या, मानसिक संतुलन और सतत आत्मनियंत्रण पर बल दिया। सभी पुरुषार्थों की प्राप्ति के लिए आरोग्य सबसे आवश्यक है।

कौमारभृत्य विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. त्रिविक्रम मानी त्रिपाठी जी ने अपने संबोधन में सभी को संबोधित करते हुए कहा की हमें आज के समय में चरक संहिता को आत्मसात करने की आवश्यकता है।

आज जब विश्व फिर से आयुर्वेद चिकित्सा और जीवनशैली की ओर लौट रहा है, चरक जी का संदेश और योगदान और भी अधिक प्रासंगिक हो गया है।

आइए इस चरक जयंती पर हम सभी स्वास्थ्य के प्रति सजग और भारतीय ज्ञान परंपरा के प्रति गर्वित बनें। आयुर्वेद कॉलेज के प्राचार्य डॉ. गिरिधर वेदांत, डॉ. गोपीकृष्ण, डॉ. सुमित, डॉ. शांति भूषण ने विद्यार्थियों को पुरस्कृत किया। रंगोली प्रतियोगिता में निर्णायक मण्डल की भूमिका में डॉ. रश्मि, डॉ. मिनी, डॉ. संध्या ने निभाई।

कारगिल विजय दिवस पर संक्षिप्त कारगिल युद्ध का प्रदर्शन करते हुए। सभी सैनिकों को नमन किया गया।

कार्यक्रम का संयोजन संहिता सिद्धांत एवं संस्कृत समिति द्वारा किया गया।

कार्यक्रम का संचालन व संयोजन आचार्य साध्वी नन्दन पाण्डेय और डॉ. शांति भूषण ने किया। कार्यक्रम में डॉ. गोपीकृष्ण आचार्य, डॉ. त्रिविक्रम मणि त्रिपाठी, डॉ. नवीन, डॉ. देवी, डॉ. प्रिया, डॉ. बी. डी. भारती, डॉ. दीपू मनोहर सहित सभी बीएएमएस विद्यार्थी और प्राध्यापक उपस्थित रहें।

आरोग्य पथ

मासिक ई-पत्रिका

व्यवसायिक कौशल विकास प्रशिक्षण

महायोगी गोरखनाथ चिकित्सालय

व्यवहारिक प्रशिक्षण कराती हुई श्रीमती पूजा राठौर

दिनांकः 28 जुलाई, 2025 को महायोगी गोरखनाथ चिकित्सालय में स्टॉफ प्रोफेशनल डेवलपमेंट प्रोग्राम का शुभारंभ 2025 को किया गया। यह प्रशिक्षण कार्यक्रम दो चरणों में प्रस्तावित है। पहला चरण 28 जुलाई से 30 जुलाई 2025 तक एवं द्वितीय चरण 31 जुलाई से 02 अगस्त 2025 तक निर्धारित है।

यह कार्यक्रम नर्सिंग स्टॉफ की कौशल क्षमताओं को सशक्त बनाने एवं उनके सतत विकास हेतु एक महत्वपूर्ण कदम है।

कार्यक्रम का उद्घाटन माननीय कुलपति, श्री सुरिन्दर सिंह जी एवं श्री जीएन सिंह, सलाहकार, माननीय मुख्यमंत्री, उत्तर प्रदेश एवं पूर्व औषधि महानियंत्रक के गरिमामयी उपस्थिति में सम्पन्न हुआ। उनके प्रेरणादायक विचारों ने प्रतिभागियों को प्रशिक्षण के प्रति जागरूकता एवं उत्साह से भर दिया।

कार्यक्रम की शुरुआत आमंत्रित प्रशिक्षकों एवं प्रतिभागियों के स्वागत के साथ हुई। उद्घाटन भाषण में सतत प्रशिक्षणए कौशल विकास एवं रोगी सुरक्षा की आवश्यकता पर बल दिया गया।

तकनीकी सत्र प्रथम–विषयः हैंड्स–ऑन ट्रेनिंग (डेमोंस्ट्रेशन एवं री–डेमोंस्ट्रेशन) एवं ट्रायेज (Triage) प्रशिक्षकः श्रीमती पूजा राठौर, नर्सिंग ट्यूटर, कॉलेज ऑफ नर्सिंग, आईएमएस, बीएचयू, वाराणसी

श्रीमती नम्रता सिंह, नर्सिंग ट्यूटर, कॉलेज ऑफ नर्सिंग, आईएमएस, बीएचयू, वाराणसी, इस सत्र में प्रतिभागियों ने आवश्यक क्लीनिकल प्रक्रियाओं का प्रदर्शन एवं उसका पुनः प्रदर्शन करते हुए सक्रिय रूप से भाग लिया। इसके अतिरिक्त, Triage प्रणाली – जिसमें रोगियों की गंभीरता के आधार पर प्राथमिकता तय की जाती है–पर विस्तृत प्रशिक्षण प्रदान किया गया। इस प्रशिक्षण का उद्देश्य प्रतिभागियों को व्यावहारिक दक्षता एवं आत्मविश्वास प्रदान करना रहा।

तकनीकी सत्र द्वितीयः विषयः आपातकालीन कोड्स प्रशिक्षण (Emergency Codes Training) प्रशिक्षकः श्रीमती नम्रता सिंह, नर्सिंग ट्यूटर, कॉलेज ऑफ नर्सिंग, आईएमएस, बीएचयू, वाराणसी रहीं।

इस सत्र में अस्पताल में प्रयुक्त विभिन्न आपातकालीन कोड्स (जैसे – कोड ब्लू, कोड रेड, कोड पिंक आदि) की जानकारी दी गई। प्रतिभागियों को आपात स्थितियों में त्वरित एवं समन्वित प्रतिक्रिया देने हेतु परिदृश्य.आधारित प्रशिक्षण प्रदान किया गया।

प्रथम दिवस का सफल आयोजन यह दर्शाता है कि हमारा संस्थान गुणवत्तापूर्ण और सुरक्षित स्वास्थ्य सेवा प्रदान करने हेतु सतत रूप से अपने स्टॉफ को सशक्त बनाने के लिए प्रतिबद्ध है।

इस कार्यक्रम को सफल बनाने में डॉ. रोहित ऐलानी–चिकित्सा अधीक्षक, डॉ. रघुरामराम अचार–उप कुलसचिव (हॉस्पिटल प्रशासन), श्रीमती ममता रावत–असिस्टेंट चिकित्सा अधीक्षक एवं श्रीमती रिंकी सिंह, असिस्टेंट चिकित्सा अधीक्षक के सहयोग, मार्गदर्शन एवं सक्रिय समर्थन से कार्यक्रम का प्रथम दिवस अत्यंत सफल एवं प्रेरणादायक सिद्ध

आरोग्य पथ

मासिक ई-पत्रिका

व्यवसायिक कौशल विकास प्रशिक्षण

महायोगी गोरखनाथ चिकित्सालय

व्यवसायिक कौशल विकास का प्रशिक्षण कराती हुई श्रीमती पूजा राठौर

दिनांकः 29 जुलाई, 2025 को महायोगी गोरखनाथ चिकित्सालय में नर्सिंग स्टॉफ हेतु संचालित प्रोफेशनल डेवलपमेंट प्रोग्राम के द्वितीय दिवस दिन का आयोजन पूर्ण ऊर्जा एवं सहभागिता के साथ सम्पन्न हुआ। प्रतिभागियों ने विभिन्न सत्रों में न केवल सैद्धांतिक ज्ञान अर्जित कियाए बल्कि व्यावहारिक प्रशिक्षण में भी उत्साहपूर्वक भाग लिया।

तकनीकी सत्र प्रथम में प्रशिक्षक के रूप में डिजास्टर मैनेजमेंट विषय पर श्रीमती पूजा राठौर, नर्सिंग ट्यूटर, कॉलेज ऑफ नर्सिंग, आईएमएस, बीएचयू, वाराणसी ने आपदा प्रबंधन के विभिन्न पहलुओं जैसे– प्राकृतिक आपदाएं, मानवजनित आपदाएं, अस्पताल आधारित आपात स्थितियाँ एवं उनकी प्रतिक्रिया रणनीतियाँ पर प्रकाश डाला गया। प्रतिभागियों को आपात स्थितियों में त्वरित निर्णय एवं प्राथमिक चिकित्सा के प्रोटोकॉल्स की व्यावहारिक जानकारी दी गई।

तकनीकी सत्र द्वितीय में प्रशिक्षक के रूप में हैंड्स–ऑन ट्रेनिंग (डेमोंस्ट्रेशन एवं री–डेमोंस्ट्रेशन) विषय पर श्रीमती पूजा राठौर, नर्सिंग ट्यूटर, कॉलेज ऑफ नर्सिंग, आईएमएस, बीएचयू, वाराणसी एवं श्रीमती नम्रता सिंह, नर्सिंग ट्यूटर, कॉलेज ऑफ नर्सिंग, आईएमएस, बीएचयू, वाराणसी ने प्रतिभागियों को विभिन्न क्लीनिकल प्रक्रियाओं का वास्तविक अभ्यास करते हुए अपनी स्किल्स को सुदृढ़ किया। प्रशिक्षकों द्वारा सही तकनीकों का प्रदर्शन किया गया, जिसे प्रतिभागियों ने दोहराते हुए सीखा।

तकनीकी सत्र में प्रशिक्षक के रूप में श्रीमती नम्रता सिंह, नर्सिंग ट्यूटर, कॉलेज ऑफ नर्सिंग, आईएमएस, बीएचयू, वाराणसी ने सर्जिकल सेफ्टी चेकलिस्ट विषय पर प्रतिभागियों को सर्जिकल प्रक्रियाओं के दौरान सुरक्षा सुनिश्चित करने हेतु विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) द्वारा अनुशंसित सर्जिकल सेफ्टी चेकलिस्ट की जानकारी दी गई। इस चेकलिस्ट के माध्यम से टीम कम्युनिकेशन, रोगी पहचान, उपकरणों की जाँच एवं संक्रमण नियंत्रण जैसे बिंदुओं पर बल दिया गया।

तकनीकी सत्र चतुर्थ में प्रशिक्षक श्रीमती पूजा राठौर, नर्सिंग ट्यूटर, कॉलेज ऑफ नर्सिंग, आईएमएस, बीएचयू, वाराणसी एवं श्रीमती नम्रता सिंह, नर्सिंग ट्यूटर, कॉलेज ऑफ नर्सिंग, आईएमएस, बीएचयू, वाराणसी ने हैंड्स–ऑन ट्रेनिंग (डेमोंस्ट्रेशन एवं री–डेमोंस्ट्रेशन) विषय पर जानकारी दी।

यह अभ्यासात्मक सत्र प्रतिभागियों के लिए अत्यंत उपयोगी सिद्ध हुआ। प्रशिक्षकों ने प्रत्येक प्रतिभागी के प्रदर्शन का मूल्यांकन कर आवश्यक मार्गदर्शन प्रदान किया।

सभी सत्रों की विषयवस्तु ने नर्सिंग स्टाफ को न केवल व्यावहारिक दक्षता प्रदान की, बल्कि रोगी सुरक्षा एवं आपदा प्रतिक्रिया जैसे महत्वपूर्ण विषयों पर गहन समझ भी विकसित की।

इस कार्यक्रम को सफल बनाने में डॉ. रोहित ऐलानी – चिकित्सा अधीक्षक, डॉ. हरिओम शरण– डायरेक्टर (हॉस्पिटल प्रशासन) डॉ. रघुरामराम अचार–उप कुलसचिव (हॉस्पिटल प्रशासन), डॉ. प्रतीक सिंह, उप चिकित्सा अधीक्षक, श्रीमती ममता रावत, असिस्टेंट चिकित्सा अधीक्षक एवं श्रीमती रिंकी सिंह, असिस्टेंट चिकित्सा अधीक्षक तथा अन्य स्टॉफ के सहयोग, मार्गदर्शन एवं सक्रिय समर्थन से कार्यक्रम का द्वितीय दिवस भी अत्यंत सफल एवं प्रभावशाली सिद्ध हुआ।

फ्रेशर पार्टी

वाणिज्य संकाय

दिनांकः 30 जुलाई, 2025 को महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय के वाणिज्य संकाय में आयोजित फ्रेशर पार्टी के शुभ अवसर पर पर्यावरण और सांस्कृतिक मूल्यों को प्रोत्साहित करने हेतु तुलसी जी के पौधे का पौधारोपण किया गया। यह पहल न केवल पर्यावरण संरक्षण की दिशा में एक सार्थक कदम है, बल्कि भारतीय परंपरा एवं अध्यात्म से विद्यार्थियों को जोड़ने का प्रयास भी है।

इस विशेष पहल की शुरुआत वाणिज्य संकाय के विभागाध्यक्ष डॉ. तरुण श्याम के मार्गदर्शन में की गई।

कार्यक्रम के समन्वयक श्री रवि निषाद ने इस आयोजन को सफल बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई और विद्यार्थियों को संस्कृति एवं प्रकृति के प्रति संवेदनशील बनने का संदेश दिया।

डॉ. तरुण श्याम एवं श्री रवि निषाद ने सभी विद्यार्थियों को इस आयोजन में सक्रिय सहभागिता के लिए विशेष आभार प्रकट किया और उन्हें उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाएं दीं।

'तुलसी सिर्फ एक पौधा नहीं, जीवन की शुद्धता, सकारात्मकता और सांस्कृतिक चेतना का प्रतीक है।' इस संदेश के साथ फ्रेशर पार्टी का आयोजन समापन की ओर अग्रसर हुआ।

व्यवसायिक कौशल विकास प्रशिक्षण

महायोगी गोरखनाथ चिकित्सालय

व्यवसायिक एवं ट्रायेज प्रशिक्षण कराती हुई श्रीमती पूजा राठौर

दिनांकः 30 जुलाई, 2025 को महायोगी गोरखनाथ चिकित्सालय में आयोजित नर्सिंग स्टॉफ प्रोफेशनल डेवलपमेंट प्रोग्राम का आज तीसरा एवं प्रथम चरण का अंतिम दिवस अत्यंत सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ।

यह प्रशिक्षण कार्यक्रम 28 जुलाई से 30 जुलाई 2025 तक निर्धारित था, जिसमें नर्सिंग स्टॉफ की क्लिनिकल दक्षता, आपातकालीन प्रतिक्रिया और ऑपरेशन थिएटर संबंधी व्यवहारिक कौशल को उन्नत करने हेतु बहुआयामी सत्र आयोजित किए गए।

इस कार्यक्रम का उद्देश्य केवल तकनीकी प्रशिक्षण तक सीमित न होकर, प्रतिभागियों में निर्णय लेने की क्षमता, आत्मविश्वास एवं रोगी सुरक्षा के प्रति जागरूकता को भी सुदृढ़ करना रहा।

यह प्रशिक्षण कार्यक्रम नर्सिंग स्टॉफ के व्यवहारिक एवं तकनीकी कौशल को सशक्त करने की दिशा में एक प्रभावी पहल सिद्ध हुआ है।

तृतीय दिवस की मुख्य गतिविधियाँ – 30 जुलाई 2025 तकनीकी सत्र– समयः प्रातः 9:00 बजे से 10:00 बजे तक, विषयःऑपरेशन थिएटर प्रोटोकॉल्स, प्रशिक्षकः श्रीमती नम्रता सिंह, नर्सिंग ट्यूटर, कॉलेज ऑफ नर्सिंग, आई.एम. एस.ए. बी.एच.यू.ए वाराणसी।

इस सत्र में ऑपरेशन थिएटर में कार्य करने से पूर्व अपना, जाने वाले मानक प्रोटोकॉल्स जैसे कि सर्जिकल एसेप्सिस, स्टरलाइजेशन प्रक्रिया, संक्रमण नियंत्रण, PPE का प्रयोग, उपकरणों का हैंडलिंग एवं OT की कार्य संस्कृति पर व्यावहारिक ज्ञान प्रदान किया गया। प्रतिभागियों ने इस सत्र को अत्यंत लाभकारी एवं व्यावहारिक रूप से उपयोगी बताया।

तकनीकी सत्र – द्वितीय] समय–10:30 पूर्वाह्न से 1:00 अपराह्न– विषयः वयस्क BLS – हैंड्स ऑन ट्रेनिंग (डेमोंस्ट्रेशन एवं री–डेमोंस्ट्रेशन), प्रशिक्षक– श्रीमती पूजा राठौर, श्रीमती नम्रता सिंह, (नर्सिंग ट्यूटर, कॉलेज ऑफ नर्सिंग, आई.एम. एस.ए. बी.एच.यू.ए. वाराणसी), इस सत्र में प्रतिभागियों को CPR, चेस्ट कंप्रेशन, एयरवे मैनेजमेंट और रेस्क्यू ब्रीदिंग जैसे महत्वपूर्ण जीवन रक्षक तकनीकों का वास्तविक अभ्यास कराया गया। मैनिकिन पर डेमोंस्ट्रेशन एवं पुनः अभ्यास के माध्यम से प्रतिभागियों ने गहराई से BLS प्रक्रियाओं को आत्मसात किया।

तकनीकी सत्र – तृतीय,समय– 2:00 अपराह्न से 3:00 अपराह्न, विषय– BLS प्रक्रिया का गहन अभ्यास, प्रशिक्षक– श्रीमती पूजा राठौर, नर्सिंग ट्यूटर, कॉलेज ऑफ नर्सिंग, आई.एम.एस.ए. बी.एच.यू. ए. वाराणसी। इस सत्र में पूर्ववर्ती दो दिनों के सभी ठरै

अवधारणाओं की समीक्षा, संदेह निवारण एवं वास्तविक केस आधारित चर्चा के माध्यम से प्रतिभागियों को अपने ज्ञान को स्पष्ट एवं सशक्त करने का अवसर मिला। प्रतिभागियों को अपनी समझ को निखारने एवं त्रुटियों के सुधार के लिए अभ्यास के अवसर प्रदान किए गए।

तकनीकी सत्र – चतु थ ा , समय– 3:00 अपराह्न से 4:30 अपराह्न, विषयः अंतिम रीडेमोंस्ट्रेशन और क्लिनिकल सिचुएशन–आधारित अभ्यास प्रशिक्षकः, श्रीमती पूजा राठौर, श्रीमती नम्रता सिंह, (नर्सिंग ट्यूटर, कॉलेज ऑफ नर्सिंग, आई.एम.एस.ए. बी.एच.यू.ए. वाराणसी), इस सत्र में प्रतिभागियों को विभिन्न परिदृश्यों के माध्यम से तीव्र निर्णय क्षमता, टीम समन्वय एवं अनुरूप प्रतिक्रिया देने की क्षमता का मूल्यांकन किया गया। प्रतिभागियों ने गहन आत्मविश्वास के साथ सभी अभ्यास पूरे किए। पोस्ट–टेस्ट, समयः 4:30 अपराह्न से 5:00 अपराह्न, तीन दिवसीय प्रशिक्षण के उपरांत प्रतिभागियों का लिखित एवं व्यवहारिक मूल्यांकन पोस्ट टेस्ट के रूप में लिया गया, जिससे यह सुनिश्चित हो सके कि सभी प्रतिभागियों ने प्रशिक्षण को सही रूप में आत्मसात किया है।

प्रथम चरण का समापनः तीन दिवसीय प्रथम चरण का समापन अत्यंत उत्साह, ऊर्जा एवं व्यावसायिक विकास के साथ हुआ। प्रतिभागियों ने प्रशिक्षण की उपयोगिता को अनुभव करते हुए इसे अपने दैनिक कार्य में अपनाने का संकल्प लिया।

इस कार्यक्रम को सफल बनाने में डॉ. रोहित ऐलानी–चिकित्सा अधीक्षक डॉ. हरिओम शरण–डायरेक्टर (हॉस्पिटल प्रशासन) डॉ. रघुरामराम अचार–उप कुलसचिव (हॉस्पिटल प्रशासन), डॉ. प्रतीक सिंह, उप चिकित्सा अधीक्षक, श्रीमती ममता रावत–असिस्टेंट चिकित्सा अधीक्षक एवं श्रीमती रिंकी सिंह–असिस्टेंट चिकित्सा अधीक्षक तथा अन्य स्टॉफ की सक्रिय भूमिका रही।

द्वितीय चरण का शुभारंभ 31 जुलाई 2025 से होगा, जिसमें नर्सिंग स्टॉफ को इसी तरह का उच्च स्तरीय प्रशिक्षण प्रदान किया जाएगा।

व्यवसायिक कौशल विकास प्रशिक्षण

महायोगी गोरखनाथ चिकित्सालय

व्यवहारिक प्रशिक्षण कराती हुई श्रीमती पूजा राठौर

दिनांकः 31 जुलाई, 2025 को महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय के चिकित्सालय में चल रहे नर्सिंग स्टॉफ प्रोफेशनल डेवलपमेंट प्रोग्राम का द्वितीय चरण दिनांक 31 जुलाई 2025 को उत्साहपूर्वक प्रारंभ हुआ।

यह चरण उन नर्सिंग कर्मियों के लिए आयोजित किया गया है जो अपने कौशल को व्यवहारिक अभ्यास एवं उन्नत प्रशिक्षण के माध्यम से मजबूत करना चाहते हैं।

प्रथम दिवस की प्रमुख गतिविधियाँ –31 जुलाई 2025 तकनीकी सत्र–प्रथम (बेसिक लाइफ सपोर्ट – बाल चिकित्सा) प्रशिक्षकः श्रीमती गुड़िया, नर्सिंग ट्यूटर, कॉलेज ऑफ नर्सिंग, IM BHU, वाराणसी, इस सत्र में बाल रोगियों के लिए आपातकालीन परिस्थितियों में अपनाई जाने वाली CPR प्रक्रिया, श्वसन सहायता तकनीकें और त्वरित प्रतिक्रिया विधियों की जानकारी दी गई। प्रतिभागियों ने इसे अत्यंत उपयोगी, स्पष्ट एवं जीवन रक्षक अभ्यास बताया।

तकनीकी सत्र – द्वितीय हैंड्स ऑन ट्रेनिंग (डेमोंस्ट्रेशन एवं री–डेमोंस्ट्रेशन), प्रशिक्षकगणः श्रीमती गुड़िया, श्रीमती सारिका (नर्सिंग ट्यूटर, कॉलेज ऑफ नर्सिंग, IMS BHU, वाराणसी), प्रतिभागियों को CPR तकनीक, चेस्ट कंप्रेशन, एयरवे मैनेजमेंट एवं आपातकालीन प्रतिक्रिया हेतु आवश्यक उपकरणों की व्यावहारिक जानकारी दी गई। मैनिकिन पर अभ्यास कराकर उन्हें पुनः प्रदर्शन का अवसर भी प्रदान किया गया।

तकनीकी सत्र – तृतीय, नर्सिंग कौशल दक्षता का परिचय, प्रशिक्षकः श्रीमती सारिका, नर्सिंग ट्यूटर, कॉलेज ऑफ नर्सिंग, IMS BHU, वाराणसी, इस सत्र में नर्सिंग कौशल की आधारभूत आवश्यकताओं, क्लिनिकल निर्णय लेने की क्षमता, रोगी मूल्यांकन, समय प्रबंधन एवं कम्युनिकेशन स्किल्स पर विशेष बल दिया गया।

17 जुलाई, 2025

कुलसचिव महोदय की अध्यक्षता में सत्र 2025–26 के छात्रवृत्ति आवेदन पत्रों पर शासन द्वारा निर्धारित समय–सारिणी के अनुसार कार्यवाही किए जाने पर विचार हेतु सम्पन्न हुई बैठक की कार्यवृत्त।

कार्यवाही :

1. विद्यार्थियों के लिए सरकार द्वारा चलाई जा रही कल्याणकारी योजनायें यथा छात्रवृत्ति एवं टैबलेट वितरणको प्राथमिकता दी जाए तथा निर्धारित तिथि तक वांछित समस्त प्रक्रियायें पूरी की जाए।
2. सरकार द्वारा निर्धारित अन्तिम तिथि की प्रतीक्षा किए बगैर समय से पूर्व आवेदन पत्र भरे जाने से सम्बन्धित समस्त कार्यवाही पूरी कर ली जाए।
3. छात्रवृत्ति पोर्टल के काम न करने की सूचना जिला समाज कल्याण अधिकारी, गोरखपुर को लगातार दी जाए।
4. समस्त सम्बन्धितों को निर्देशित किया गया कि छात्रवृत्ति पोर्टल नियमित आधार पर प्रतिदिन देखा जाए तथा अपलोड की गई अद्यावधिक जानकारी/सूचना से अवगत हुआ जाए।
5. डिजीशक्ति का वेबसाइट चेक किया जाए तथा शत–प्रतिशत विद्यार्थियों को इसका लाभ मिले इस उद्देश्य से जिन विद्यार्थियों की केवाईसी अभी तक नहीं हो पाई है, उसे पूरी की जाए, जिससे कोई भी विद्यार्थी इस योजना के लाभ से वंचित न होने पाए।

विभागीय आयोजन

महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर

15 अगस्त, 2025	स्वतंत्रता दिवस समारोह
28 अगस्त, 2025	विश्वविद्यालय स्थापना दिवस समारोह

गुरु गोरक्षनाथ इंस्टिट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेस

01 से 07 अगस्त, 2025	विश्व स्तनपान सप्ताह।
06 से 13 अगस्त, 2025	संस्कृत सप्ताह
06 से 13 अगस्त, 2025	पीए–5, नार्गाजुन बैच

महंत अवेद्यनाथ पैरामेडिकल कॉलेज

15 अगस्त, 2025	स्वतंत्रता दिवस का आयोजन।
29 अगस्त 2025	राष्ट्रीय सेवा योजना के अंतर्गत एक दिवसीय शिविर का आयोजन।

सम्बद्ध स्वास्थ्य विज्ञान संकाय

01 से 08 अगस्त, 2025	नव–प्रवेशित विद्यार्थियों का दीक्षारम्भ कार्यक्रम

श्री गोरक्षनाथ मेडिकल कॉलेज हॉस्पिटल एण्ड रिसर्च सेण्टर

02, 04 अगस्त, 2025	कम्युनिटी मेडिसिन थ्योरी एंड प्रैक्टिकल एग्जाम
18 अगस्त से 23 अगस्त 2025	तृतीय व्यवसायिक लिखित परीक्षा
25 से 27 अगस्त, 2025	तृतीय व्यवसायिक प्रयोगात्मक परीक्षा

निर्माणाधीन परिसर

01 निर्माणाधीन क्रीडांगन

02 निर्माणाधीन फार्मेसी संकाय

03 निर्माणाधीन प्रेक्षागृह

04 निर्माणाधीन शिक्षक आवास

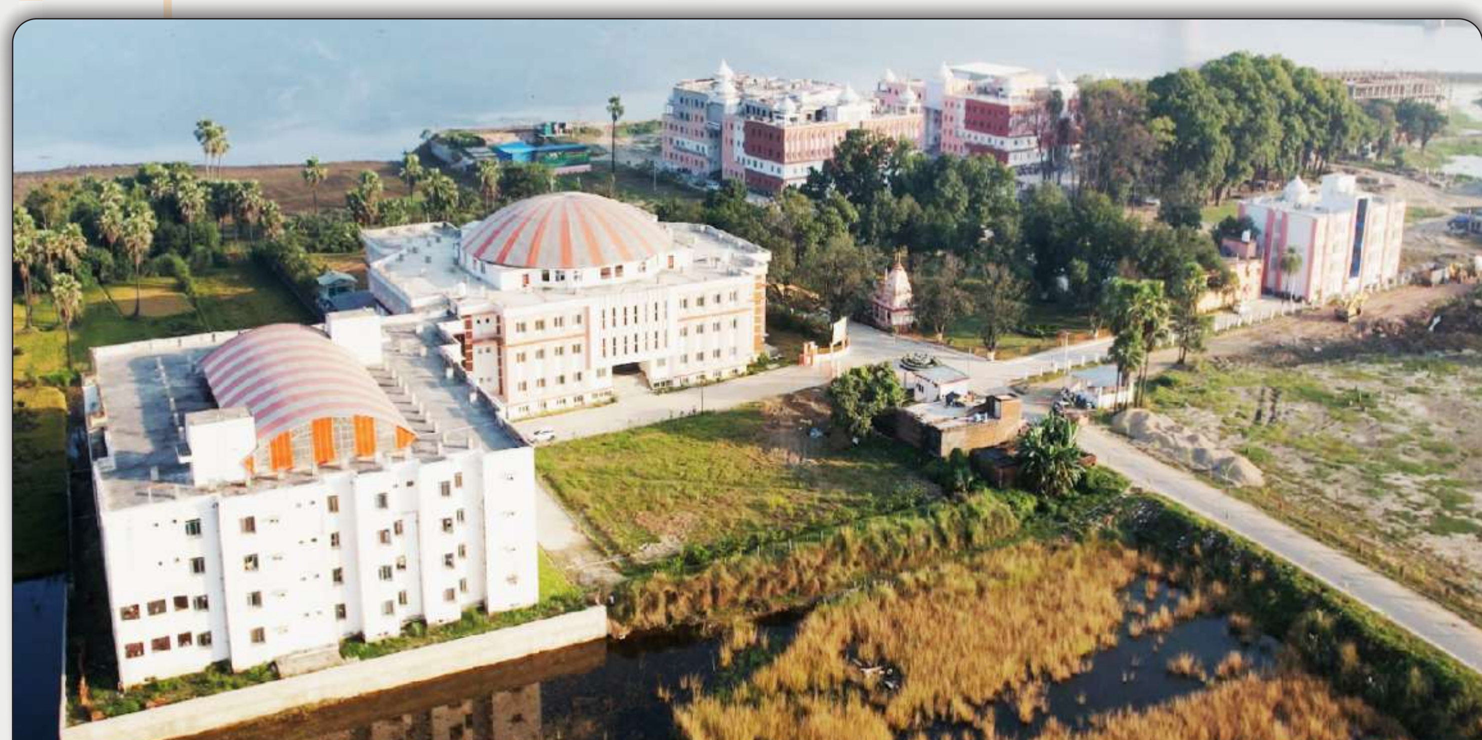

05 विश्वविद्यालय परिसर का वायवीय दृश्य

आरोग्य पथ

मासिक ई-पत्रिका

01 माननीय राष्ट्रपति

02 माननीय राज्यपाल

03 माननीय मुख्यमंत्री

04 माननीय कुलपति

05 माननीय राष्ट्रपति एवं माननीय मुख्यमंत्री

06 माननीय राज्यपाल एवं माननीय राष्ट्रपति

07 माननीय राज्यपाल एवं माननीय कुलपति

08 लोकार्पण समारोह

प्रधान सम्पादक
डॉ. विमल कुमार दूबे

सम्पादक
आचार्य साध्वीनन्दन पाण्डेय

संपादक मण्डल
श्री रोहित श्रीवास्तव, डॉ. अनुपमा ओझा

ग्राफिक्स डिजाइनर: श्री शारदानन्द पाण्डेय

mguniversitygkp@mgug.ac.in
https://www.mgug.ac.in/
+91-9415266014, +91-9935904499, +91-9794299451
Arogya Dham, Balapar Road, Sonbarsa, Gorakhpur